ड्राफ्ट

O.P. JINDAL GLOBAL
INSTITUTION OF EMINENCE DEEMED TO BE
UNIVERSITY
A Private University Promoting Public Service

I.D.E.A.S.
OFFICE of
INTERDISCIPLINARY STUDIES

समावेशी विकास – विकसित कुरुक्षेत्र

INCLUSIVE GOVERNANCE - DEVELOPED KURUKSHETRA

(A Human Development Agenda Report for Kurukshetra District)
(मानव विकास उद्देश्यसूची विवरण: कुरुक्षेत्र ज़िला)

IDEAS - Office of Interdisciplinary Studies
O.P. Jindal Global University

कुरुक्षेत्र ज़िला

विषयसूची

- कुरूक्षेत्र जिले की जनसांख्यिकीय रूपरेखा 04
  - कुरुक्षेत्र की भौगोलिक स्थिति 05
  - कुरुक्षेत्र की जनसंख्या 05
  - कुरुक्षेत्र ज़िले का कार्यबल 11
    - कृषि 12
    - उद्योग 15
    - सेवाएँ 16
- क्षेत्रीय केंद्रबिंदु 17
  - आजीविका 17
    - उच्च बेरोजगारी दर 18
    - शिक्षित बेरोज़गार 20
    - युवा बेरोज़गारी 22
    - अनुपस्थित युवा 24
  - स्वास्थ्य 26
    - बच्चों का स्वास्थ्य – अल्प व अति पोषण 27
    - रोगी-बिस्तर अनुपात 29
    - बच्चों और वयस्कों में एनीमिया की व्यापकता 31
  - शिक्षा 32
    - स्कूलों का वितरण 33
    - निजी स्कूली शिक्षा प्रतिशत 35
    - शिक्षा की गुणवत्ता 37
    - कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय 39

कुरूक्षेत्र जिले की
जनसांख्यिकीय रूपरेखा

एक ज़िले के रूप में स्थापित कुरुक्षेत्र, ना केवल हरियाणा बल्कि देश में एक ऐतिहासिक और धार्मिक स्थान के रूप में अत्यधिक महत्व रखता है। 1973 में स्थापित यह ज़िला रणनीतिक रूप से राष्ट्रीय राजधानी, नई दिल्ली से केवल 150 किमी दूर, राष्ट्रीय राजमार्ग एक पर ग्रैंड ट्रंक रोड पर स्थित है। भौगोलिक रूप से कुरुक्षेत्र ज़िला, हरियाणा के दो व्यस्त शहरों, करनाल (उत्तर में 34 किमी) और अंबाला (दक्षिण में 40 किमी) के मध्य में स्थापित है। उत्तरी भारत में एक महत्वपूर्ण परिवहन केंद्र के रूप में जाने जाने वाले कुरुक्षेत्र की लाभप्रद भौगोलिक स्थिति तथा साथ ही उत्कृष्ट सड़कमार्ग तथा सुगम रेल मार्ग की उपलब्धता यहाँ तक पहुँचना आसान कर देती है।

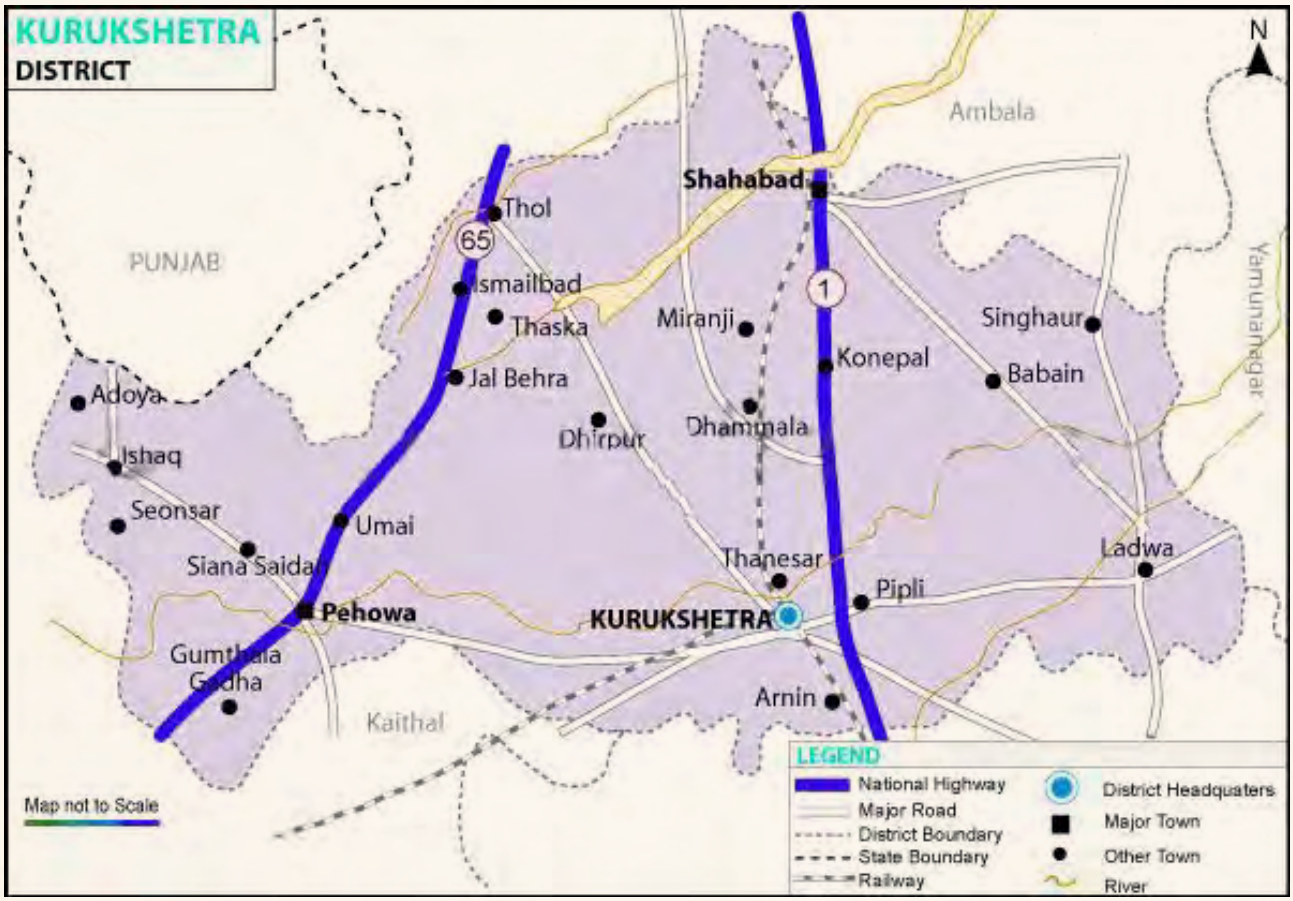

चित्र 1: कुरुक्षेत्र ज़िले का मानचित्र

कुरुक्षेत्र की भौगोलिक स्थिति

हरियाणा का कुल क्षेत्रफल 44,212 वर्ग किलोमीटर है। राज्य के कुल क्षेत्रफल के 3.46 प्रतिशत क्षेत्र में कुरुक्षेत्र ज़िले का फैलाव है जो क़रीब 1,530 वर्ग किलोमीटर है। प्रशासनिक दृष्टि से ज़िला दो उप-मंडलों में विभाजित है – थानेसर तथा पेहोवा। तहसील स्तर पर ज़िले को थानेसर, शाहबाद और पेहोवा, इन तीन तहसीलों में विभाजित किया गया है। तीन उप-तहसीलें, लाडवा, बाबैन और इस्माइलाबाद को भी इसके विभाजन में केंद्र में रखा गया है। कुरुक्षेत्र ज़िले में विकास की पहल करते हुए विकेंद्रीकृत शासन को प्राथमिकता देते हुए इसे छह सामुदायिक विकास खंडों में विभाजित किया गया है। इन छह सामुदायिक विकास खंडों, थानेसर, शाहबाद, पिहोवा, लाडवा, बाबैन और इस्माइलाबाद में 419 गाँव शामिल हैं।

कुल क्षेत्रफल (वर्ग किलोमीटर)	उप-मंडल	तहसील	उप तहसील	क़स्बा	विकास खंड	गाँव
1530	2	3	3	4	6	419

तालिका 1: कुरुक्षेत्र जिले का प्रशासनिक विवरण

कुरुक्षेत्र की भौगोलिक स्थिति

पिछले कुछ वर्षों में कुरुक्षेत्र में जनसंख्या घनत्व में अनवरत वृद्धि हुई है। 2011 जनगणना के उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार कुरुक्षेत्र ज़िले के जनसंख्या घनत्व में 630 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर की वृद्धि हुई। 2001 में यह आँकड़ा 540 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर दर्ज़ किया गया। वर्ष 2011 में कुरुक्षेत्र की कुल जनसंख्या लगभग दस लाख थी। कुरुक्षेत्र ज़िले को हरियाणा राज्य के कुल 21 ज़िलों में से नौवीं सबसे अधिक आबादी वाले ज़िले के रूप में स्थान दिया है। यह आँकड़ा कुरुक्षेत्र के बढ़ते जनसांख्यिकीय महत्व को उजागर करता है। इसके अतिरिक्त, कुरुक्षेत्र की अनुसूचित जाति की आबादी, ज़िले की कुल आबादी का 20.17 प्रतिशत है, जो राज्य के 22.3 प्रतिशत के आँकड़े से थोड़ा कम है। तालिका 2 में 2011 की जनगणना के अनुमान के आधार पर हरियाणा राज्य और कुरूक्षेत्र जिले की प्रमुख जनसंख्या विशेषताओं का सारांश दिया गया है।

	हरियाणा	कुरुक्षेत्र
जनसंख्या (लाख में)	253.51	9.646
घनत्व (प्रति वर्ग किलोमीटर)	573	630
लिंगानुपात (महिलाएँ प्रति एक हज़ार पुरुष)	879	888
ग्रामीण क्षेत्रफल का प्रतिशत	65	71
प्रति व्यक्ति आय (2019-20) (प्रति व्यक्ति सालाना आय लाख में)	2.63	2.14
राज्य की जनसंख्या में अनुसूचित जाति का प्रतिशत	20.17%	22.30%

तालिका 2: (हरियाणा राज्य और कुरूक्षेत्र जिले की जनसंख्या विशेषताएँ (2011 की जनगणना के अनुसार)

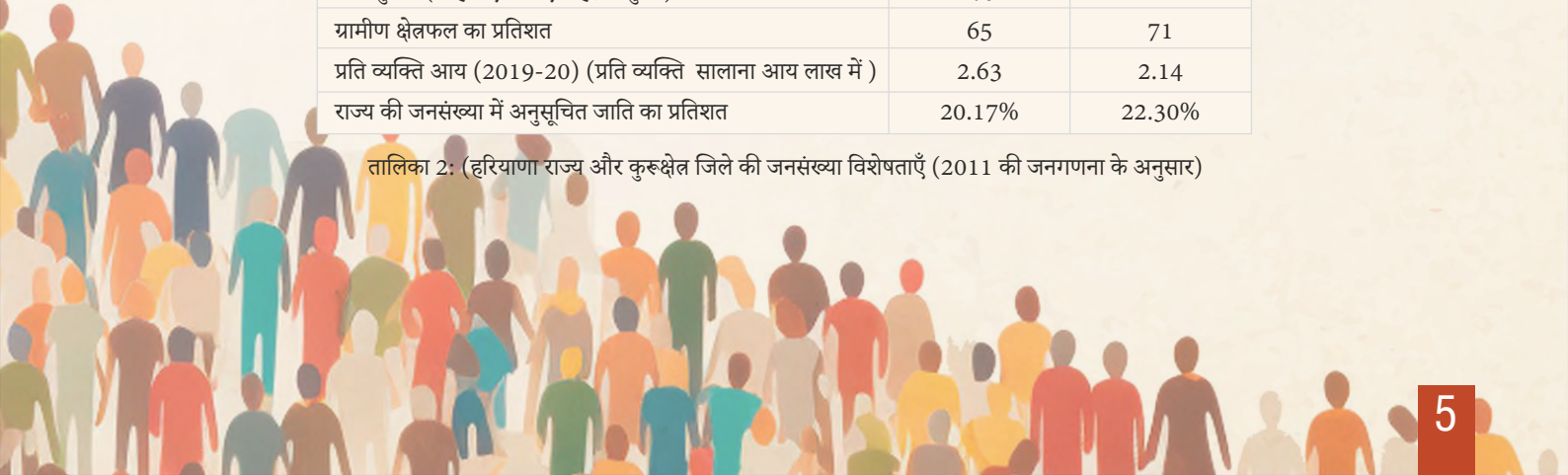

नवीनतम जनगणना आंकड़ों के अनुसार, कुरुक्षेत्र की जनसंख्या मुख्य रूप से ग्रामीण है। 2001 और 2011 के बीच ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंख्या वृद्धि दर लगभग 12 प्रतिशत और शहरी क्षेत्रों में 30 प्रतिशत थी।

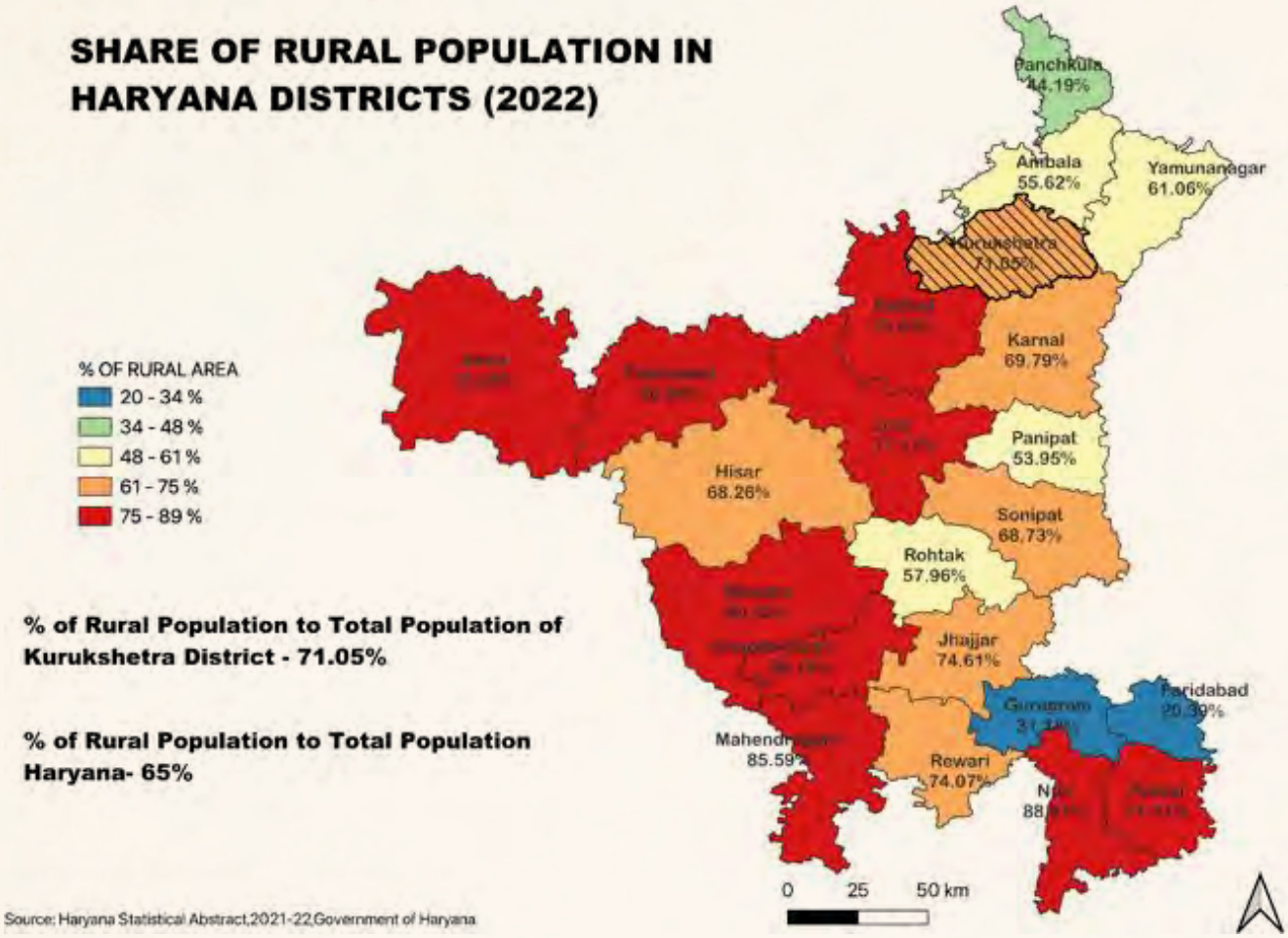

चित्र 1: हरियाणा में ग्रामीण जनसंख्या का भाग

2019-20 में कुरुक्षेत्र निवासियों की प्रति व्यक्ति आय 2.14 लाख रुपये प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष थी, जो राज्य के प्रति व्यक्ति मूल्य 2.63 लाख रुपये प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष से कम है।

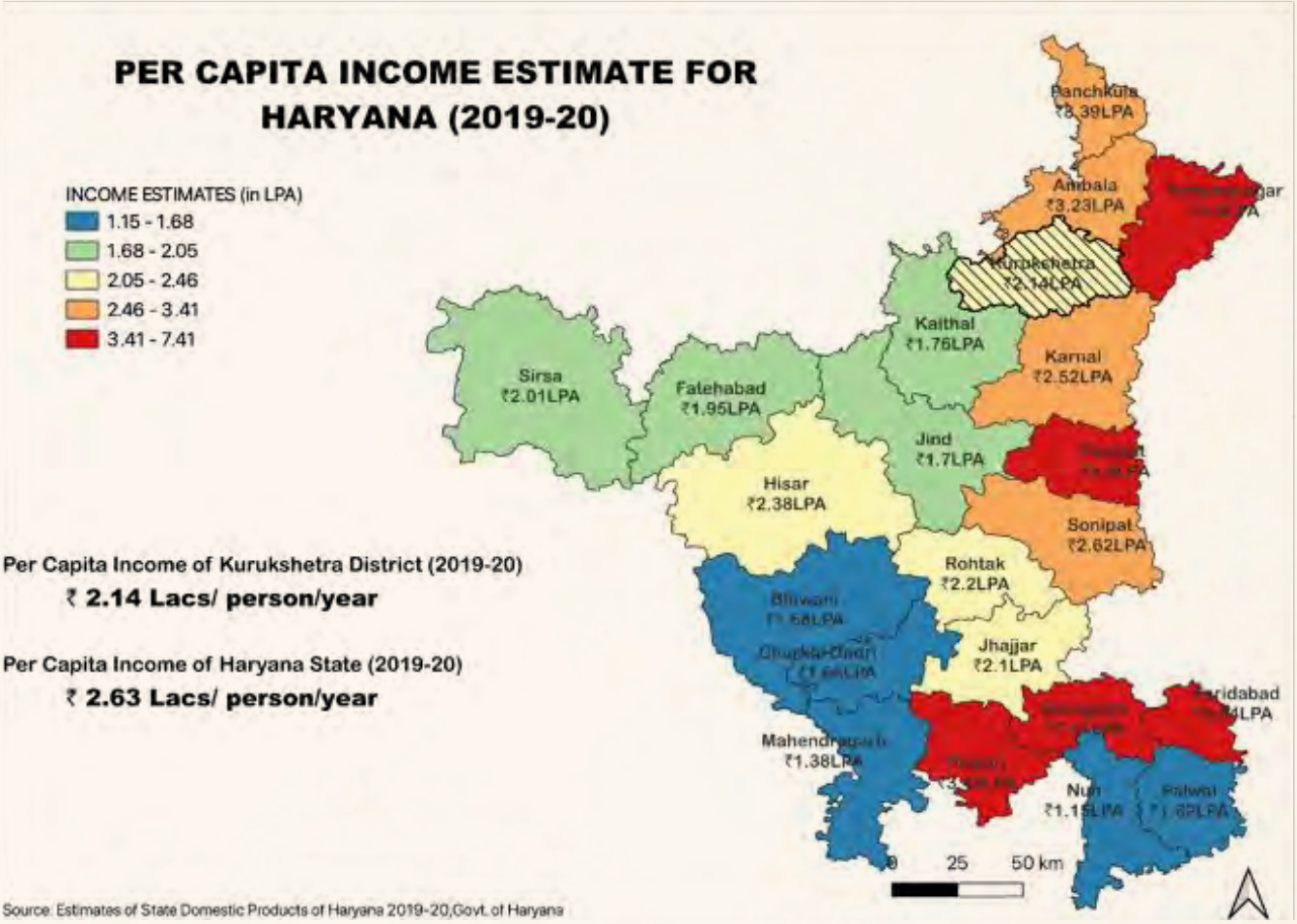

चित्र 2: हरियाणा में अनुमानित प्रति व्यक्ति आय

हरियाणा राज्य में लिंगानुपात के आँकड़े चिंताजनक हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार हरियाणा राज्य के सभी जिले प्रति 1,000 पुरुषों पर 943 महिलाओं के राष्ट्रीय औसत से नीचे आ गए हैं। पिछली दो जनगणनाओं के आँकड़ों का तुलनात्मक अध्ययन करें तो देखते हैं कि 2001 में यह आँकड़ा प्रति 1,000 पुरुषों पर 879 महिलाओं तक पहुंच गया। हालांकि, कुरुक्षेत्र का लिंगानुपात हरियाणा राज्य की तुलना में थोड़ा बेहतर है, लेकिन वर्ष 2011 में यह 888 पर बना रहा। कुरुक्षेत्र जिले की की क्रम प्रतिष्ठा(रैंकिंग) लिंगानुपात में निराशाजनक है। लिंगानुपात के मामले में देश भर के 640 में से 540 वें स्थान पर आना, लिंगानुपात जैसे महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय संकेतक पर कुरुक्षेत्र ज़िले के कमज़ोर प्रदर्शन को दर्शाता है।

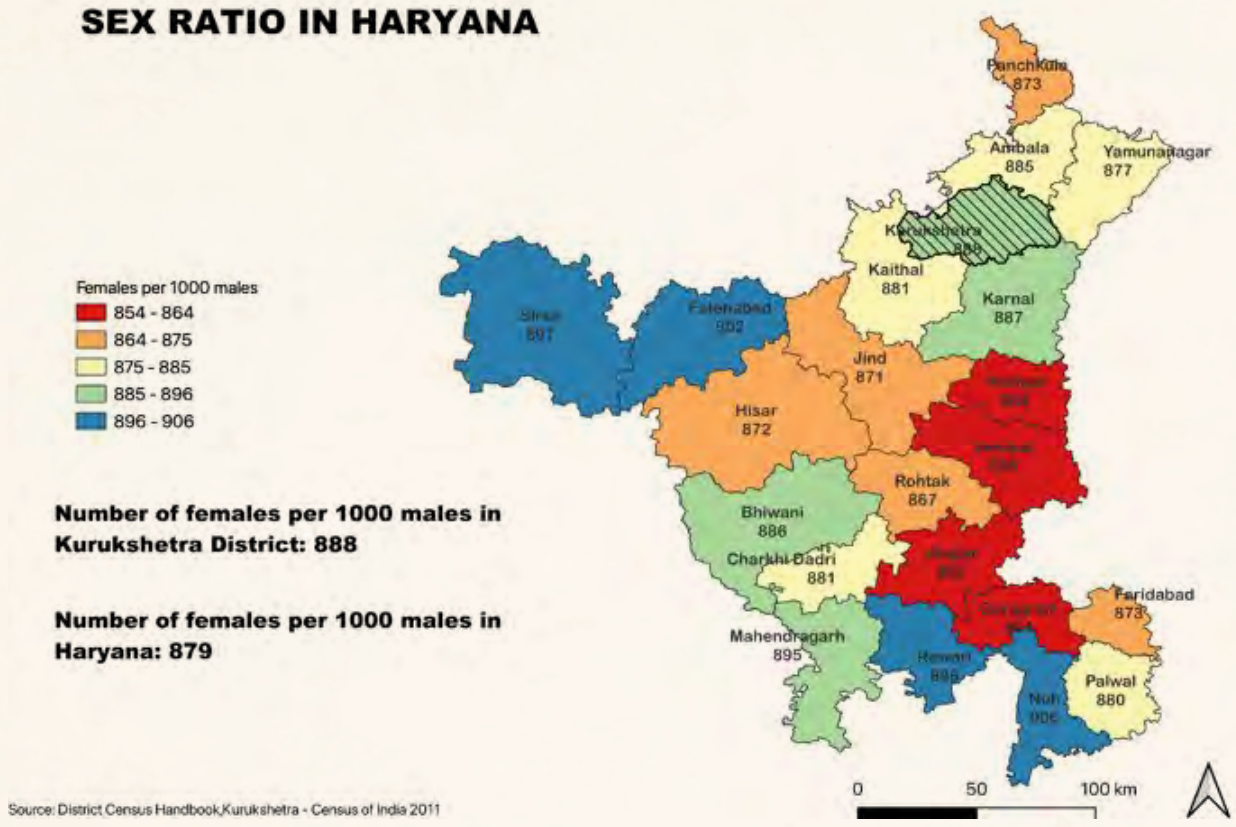

चित्र 3: हरियाणा में लिंगानुपात

साक्षरता के लिहाज़ से देखें तो हरियाणा की राज्य साक्षरता दर 75.6 प्रतिशत है वहीं कुरुक्षेत्र ज़िले की साक्षरता दर 76.3 प्रतिशत है जो राज्य की साक्षरता दर से थोड़ी अधिक है। कुरुक्षेत्र ज़िला साक्षरता स्तर के मामले में हरियाणा राज्य के सभी जिलों में 11वें स्थान पर है। ज़िले में ग्रामीण क्षेत्रों की की तुलना में शहरी क्षेत्रों में साक्षरता दर अधिक है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह दर 73 प्रतिशत है जबकि शहरी क्षेत्रों में यह दर 84 प्रतिशत है। कुरुक्षेत्र में पुरुषों और महिलाओं की साक्षरता दर के बीच लगभग 14 प्रतिशत का अंतर है जो कि एक निराशात्मक आँकड़ा है। महिला साक्षरता के मामले में कुरुक्षेत्र ज़िला पूरे प्रदेश में 10वें स्थान पर है।

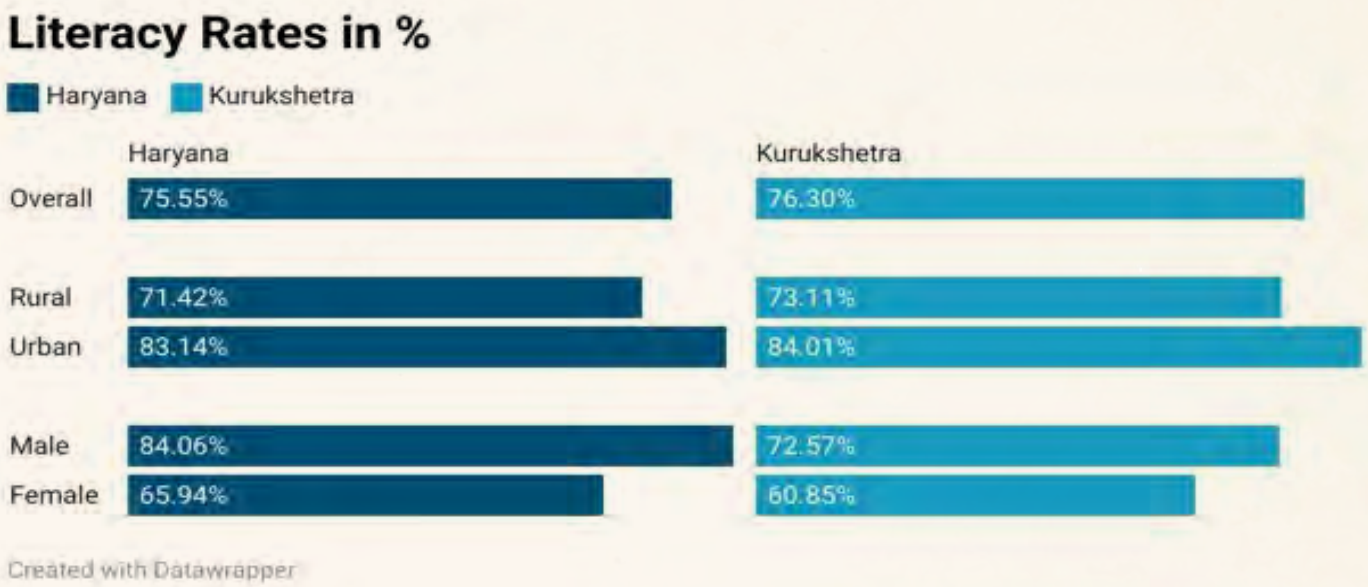

तालिका 3: हरियाणा राज्य और कुरुक्षेत्र ज़िले में साक्षरता दर

कुरुक्षेत्र ज़िले में धार्मिक परिदृश्य देखें तो यहाँ मुख्य रूप से आबादी हिंदू है। ज़िले की कुल जनसंख्या में से 87.46 प्रतिशत आबादी हिंदू धर्म का पालन करती है, जो हरियाणा राज्य के औसत 83.47 प्रतिशत से काफी अधिक है। ज़िले की जनसंख्या में मुसलमान 7.03 प्रतिशत हैं, जो राज्य के औसत 1.66 प्रतिशत से अधिक हैं। अल्पसंख्यक आबादी में सिख आबादी का उल्लेख यहाँ ज़रूरी है। सिख आबादी जनसंख्या का 14.55 प्रतिशत है, जो राज्य की 4.91 प्रतिशत सिख आबादी से काफी अधिक है। ईसाई, जैन और अन्य धार्मिक समुदायों में से प्रत्येक की हिस्सेदारी स्थानीय आबादी के 0.3 प्रतिशत से कम है।

Religion Wise % of Population

	Haryana	Kurukshetra
Hindu	87.46%	83.47%
Muslim	7.03%	1.66%
Christian	0.20%	0.20%
Sikh	4.91%	14.55%
Jain	0.21%	0.04%
Others	0.21%	0.08%

तालिका 4: हरियाणा राज्य और कुरुक्षेत्र ज़िले में धार्मिक परिदृश्य

कुरुक्षेत्र ज़िले का **कार्यबल**

कुरुक्षेत्र में लोगों की आजीविका के तीन मुख्य साधन हैं : कृषि, उद्योग व नौकरी। वित्तीय वर्ष 2022-23 में हरियाणा का सकल राज्य घरेलू उत्पाद मौजूदा कीमत के हिसाब से 9,94,154 करोड़ रहा। प्राथमिक क्षेत्र का योगदान 1,70,018 करोड़ रुपये रहा। द्वितीयक क्षेत्र ने 2,58,847 करोड़ का योगदान दिया तथा तृतीयक क्षेत्र का कुल योगदान 4,41,363 करोड़ रुपये रहा।

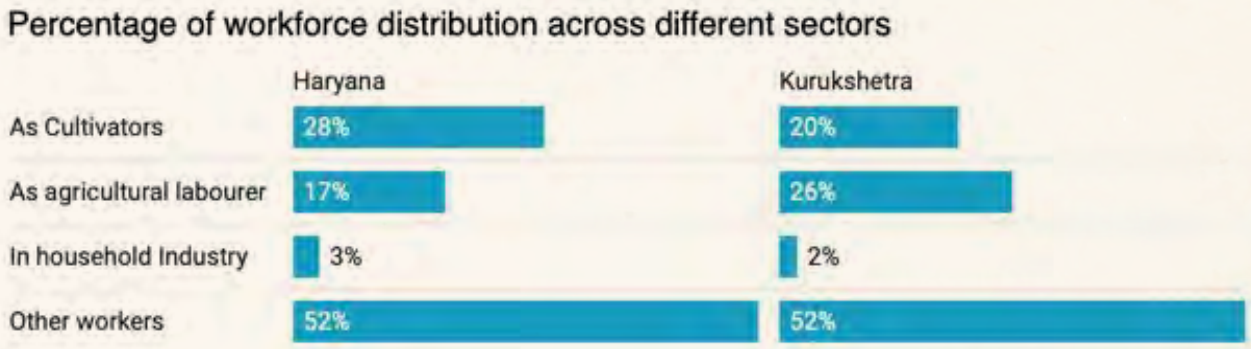

तालिका 5: विभिन्न क्षेत्रों में कार्यबल वितरण का प्रतिशत

कृषि

1,530 वर्ग किलोमीटर के विशाल भौगोलिक क्षेत्र में फैले कुरुक्षेत्र ज़िले का अधिकांश भाग ग्रामीण है जो कि इसके कुल क्षेत्रफल के 95 प्रतिशत भाग के रूप में वर्गीकृत है। क्षेत्र का प्राथमिक आर्थिक चालक कृषि है। 44 प्रतिशत प्राथमिक कार्यबल कृषि गतिविधियों से अपनी आजीविका प्राप्त करते हैं।आँकड़े बताते हैं कि जिले की लगभग लगभग 87 प्रतिशत भूमि केवल कृषि कार्यों के लिए समर्पित है। गेहूं और चावल इस जिले में की जाने वाली प्रमुख फसलें हैं। व्यापारिक फसलों में धान, आलू और गन्ना आते हैं। इसके अतिरिक्त, सब्जियों की खेती, विशेष रूप से आलू की खेती, पूरे कुरुक्षेत्र में व्यापक रूप से की जाती है जो क्षेत्र के कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान देती है।

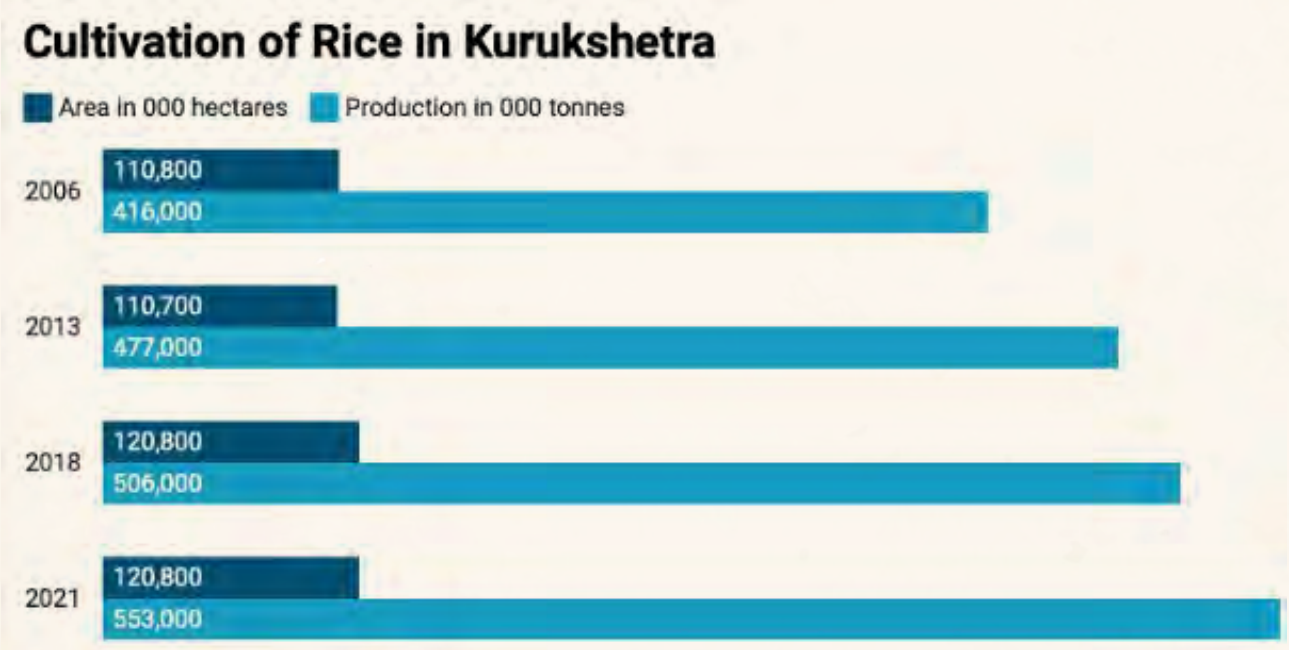

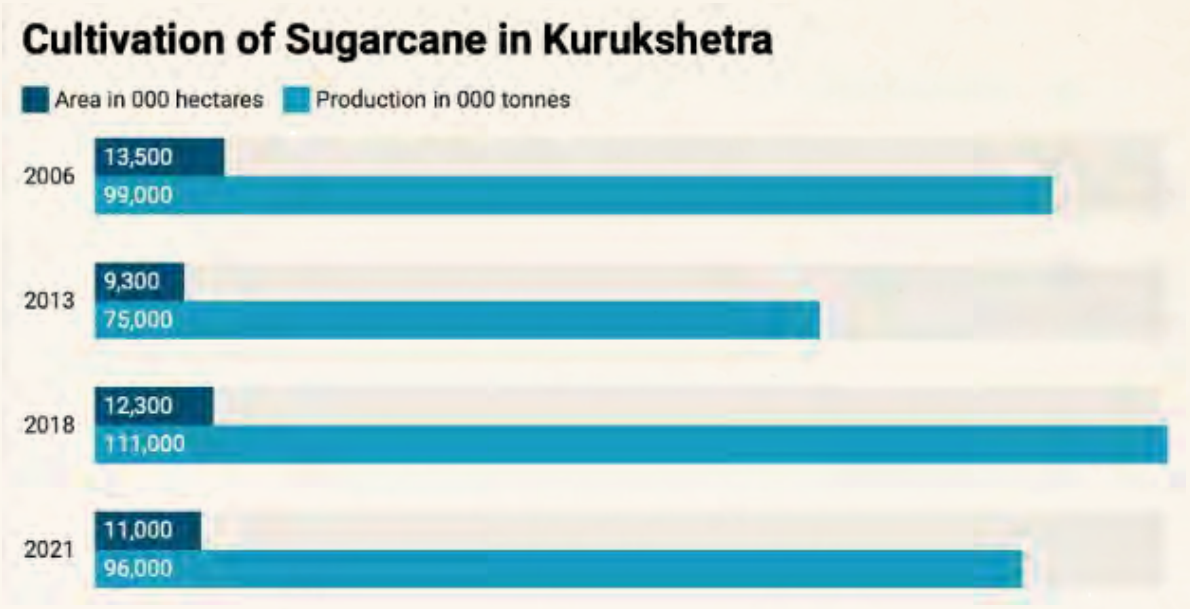

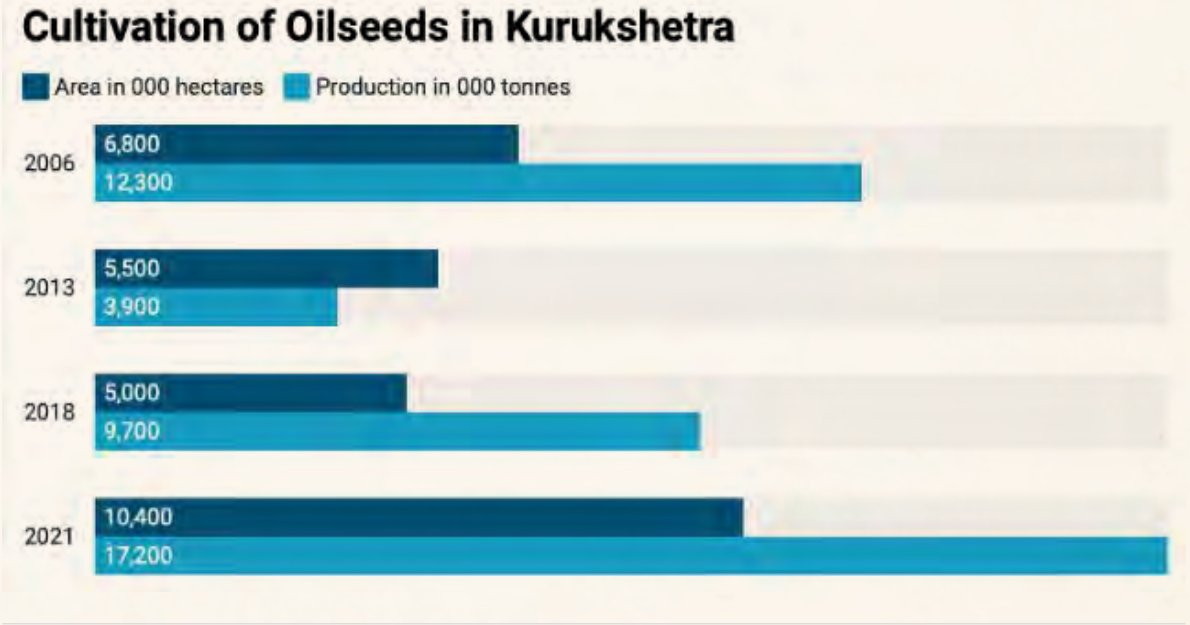

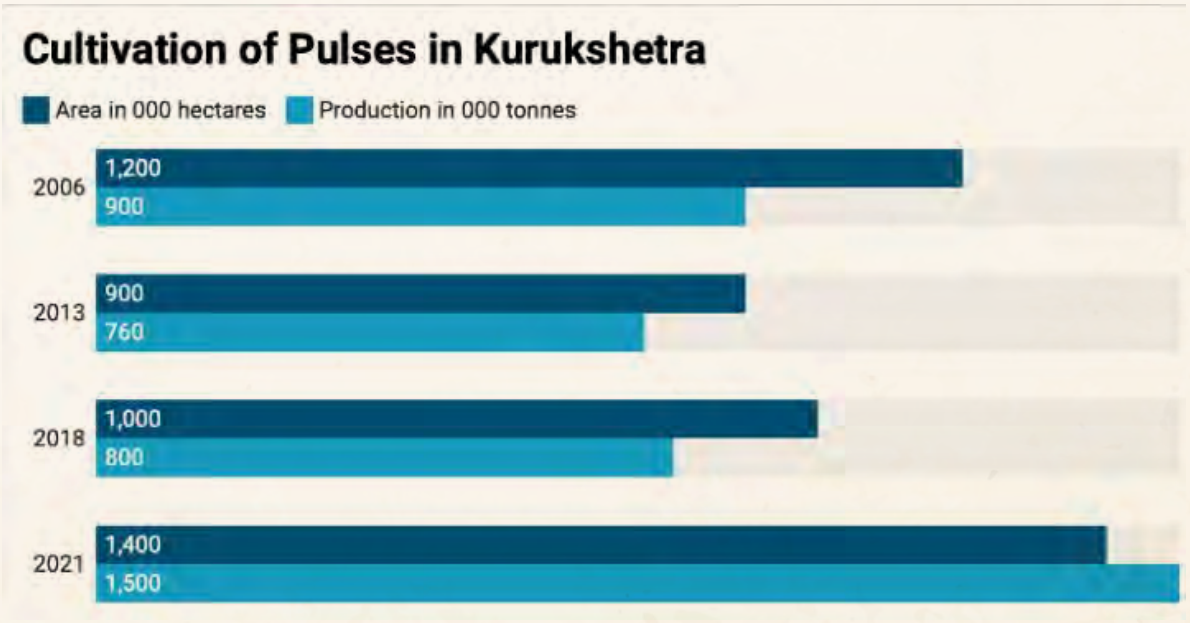

तालिका 6: कुरुक्षेत्र जिले में प्रमुख फसलों के लिए खेती और उत्पादन के अन्तर्गत भूमि क्षेत्र

खेती योग्य भूमि और उस भूमि से होने वाले उत्पादन के बीच एक दिलचस्प परिपाटी देखने को मिलती है। यह परिपाटी फसल के प्रकार अनुसार बदलती रहती है। 2006 और 2021 के बीच कुरुक्षेत्र में चावल और गेहूं की खेती के लिए, खेती के लिए प्रयुक्त भूमि में मामूली वृद्धि के साथ उत्पादन में लगातार तेज वृद्धि हुई है। गन्ना, तिलहन और दालों की खेती में यह परिपाटी देखने को नहीं मिलती है। इन कारणों की उपस्थिति से उपरोक्त अवधि में कृषि उत्पादन में उतार-चढ़ाव आया है। फसल उत्पादन में विविधता बनी रहे इसके लिए किसानों को चावल और गेहूं के अलावा अन्य फसलों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना अति आवश्यक है।

उद्योग

वर्ष 2022 तक, कुरुक्षेत्र जिले में स्थापित औद्योगिक क्षेत्र में 242 पंजीकृत कारखानों में लगभग 8000 श्रमिक कार्यरत थे। केंद्रित क्षेत्रों के रूप में उभर कर आने वाले कारकों जैसे कारखानों की संख्या, नियोजित कार्यबल और समग्र उत्पादन स्तर को समग्र रूप से देखने पर जिले की औद्योगिक प्रगति कई प्रमुख क्षेत्रों में स्पष्टता से दिखाई देती है। इन क्षेत्रों में खाद्य उत्पाद, पेय पदार्थ, गैर-धातु खनिज उत्पाद, लकड़ी और लकड़ी के उत्पाद, कागज और कागज उत्पाद, और रासायनिक और रासायनिक उत्पादों से संबंधित उद्योग शामिल थे।

हालाँकि ये क्षेत्र कुरूक्षेत्र की औद्योगिक शक्ति के मूल में थे परंतु जिले में उल्लेखनीय औद्योगिक गतिविधि तुलनात्मक रूप से छोटे लेकिन समान रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्रों में देखी गई। इनमें ऊन, रेशम, सिंथेटिक फाइबर उत्पादन, बिजली उत्पादन, मरम्मत सेवाएं, नंगे धातु और मिश्र धातु विनिर्माण, धातु और धातु भागों का निर्माण, और कपड़ा निर्माण शामिल हैं। इस विविध औद्योगिक आधार ने न केवल क्षेत्र की समग्र आर्थिक जीवन शक्ति में योगदान दिया, बल्कि जिले की सीमाओं के भीतर एक महत्वपूर्ण कार्यबल को समायोजित करते हुए, विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अवसर भी प्रदान किए।

तालिका 7: 2021 में कुरुक्षेत्र में प्रमुख उद्योगों में कार्यरत कारखानों की संख्या

जैसा कि तालिका 7 में सूचीबद्ध है, कुरूक्षेत्र जिले में छह शीर्ष रोजगार पैदा करने वाले उद्योगों में से, लकड़ी के उत्पादों, कागज और कागज उत्पादों की आपूर्ति करने वाली फैक्ट्री में 2006 और 2021 के बीच स्थिरता रही। निर्माण क्षेत्र सबसे अधिक वृद्धि देखी गई। वर्ष 2021 में, 28 कारखाने कुरुक्षेत्र के भीतर ही निर्माण उद्योग के लिए समार्पित थे। औद्योगिक विकास दर्शाते यह आँकड़े भारतीय अर्थव्यवस्था के समग्र रुझान के अनुरूप है।

सेवा क्षेत्र

हरियाणा सरकार द्वारा जारी नवीनतम सांख्यिकीय सार के अनुसार, सेवा क्षेत्र ज़िले के कुल कार्यबल का 52 प्रतिशत है। हालाँकि आँकड़ों से यह भी स्पष्ट है कि रोजगार की वार्षिक वृद्धि दर श्रम बल में वार्षिक वृद्धि दर के अनुरूप नहीं है। हर साल बढ़ते कार्य के जमाव के कारण यह स्थिति और खराब हो जाती है। ज़िले में परंपरागत रूप से, प्राथमिक क्षेत्र मुख्यतः कृषि, रोजगार का प्रमुख स्रोत रहा है। हालाँकि, समय के साथ रोजगार सृजन में इसकी हिस्सेदारी में गिरावट आई है, और लगातार बढ़ते तृतीयक क्षेत्र ने रोजगार के अवसरों को बढ़ाने में गति पकड़ी है। 2021 में, हरियाणा में 5,66,839 दुकानों, वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों, होटलों और रेस्तरां में लगभग 30,68,497 व्यक्तियों को रोजगार मिला। कुरुक्षेत्र में 24,957 दुकानों, वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों, होटलों और रेस्तरां में 52,131 व्यक्तियों के लिए नौकरियां पैदा हुईं।

स्कूलों, अस्पतालों और कॉलेजों जैसे संस्थानों तक पहुंच के मामले में, कुरुक्षेत्र जिला आम तौर पर हरियाणा राज्य से बेहतर प्रदर्शन करता है। तालिका 8 में वर्ष 2021 में संस्थानों की संख्या सूचीबद्ध है। यह सूची ज़िले के राज्य की तुलना में से बेहतर प्रदर्शन को स्पष्ट करती है। जिले में जनसंख्या के सापेक्ष राज्य के कुल औसत की तुलना में अधिक अस्पताल, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र हैं। ज़िले का प्रदर्शन शिक्षा क्षेत्र में भी राज्य से तुलनात्मक रूप से बेहतर है। वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों को छोड़कर, कुरुक्षेत्र में राज्य के औसत से अधिक स्कूल और उच्च शिक्षा संस्थान हैं। यद्यपि जिले के 22 औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में से केवल दो ही महिलाओं को कॉस्मेटोलॉजी, प्रोग्रामिंग सहायता, सिलाई, कढ़ाई और अन्य कौशल में प्रशिक्षण देने के लिए समर्पित हैं।

		Institute: Population Ratio	
Institutes	**Number**	**Kurukshetra**	**Haryana**
Health			
Number of Hospitals	3	1: 3.21 lacs	1: 3.57 lacs
Community Health Centres	5	1: 1.92 lacs	1: 2.11 lacs
Primary Health Centres	21	1: 46000	1: 48000
Education*			
Senior Secondary/High Schools	317	1: 3000	1: 2800
Middle Schools	278	1: 3500	1: 4500
Primary Schools	546	1:1800	1:2600
Medical colleges*	2	1: 4.82 lacs	1: 1.81 lacs
Engineering colleges	26	1: 37000	1: 51000
General Education	51	1: 19000	1: 15000
University	3	1: 3.21 lacs	1: 4.52 lacs
ITI	22	1:44000	1: 62000

तालिका 8: 2021 में कुरुक्षेत्र में स्वास्थ्य और शिक्षा संस्थानों की सूची

तालिका 8 कुरूक्षेत्र में प्रति जनसंख्या पर उपलब्ध स्वास्थ्य और शैक्षणिक संस्थानों की संख्या दर्शाती है। जिले में प्रत्येक 3.21 लाख लोगों पर एक अस्पताल है। यह आँकड़ा हरियाणा राज्य के आँकड़ों से बेहतर है। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की उपलब्धता भी यही बताती है।

हालाँकि, शैक्षणिक संस्थानों के विश्लेषण को गंभीरता से लिया जाना चाहिए क्योंकि आँकड़े स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों की कुल संख्या को आयु श्रेणियों के आधार पर ना दर्शा कर जनसंख्या के आधार पर दर्शाते हैं। चिकित्सा संस्थानों के मामले में, कुरुक्षेत्र हरियाणा से बेहतर है, लेकिन जब शिक्षण संस्थानों की बात आती है तो स्थिति विपरीत है। स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों और सभी प्रकार के कॉलेजों में कम संख्या में उपलब्ध संस्थान बड़ी आबादी की जरूरतों को पूरा कर रहे हैं। इस विश्लेषण का उद्देश्य हरियाणा के संबंध में कुरुक्षेत्र ज़िले की स्थिति की तुलनात्मक समझ प्रदान करना है।

क्षेत्रीय केंद्रबिंदु
आजीविका

संदर्भित क्षेत्र -
उच्च बेरोजगारी दर

विवरण

बेरोजगारी राज्य के लिए अधिक चिंता का विषय है और इसे कम करने के लिए सरकार की सक्रिय भागीदारी की अति आवश्यकता है। भारत में जनसांख्यिकीय लाभांश की उपस्थिति से बेरोजगारी बढ़ता नकारात्मक प्रभाव बढ़ रहा है। इस नकारात्मक प्रभाव के कारण संसाधनों की बर्बादी होती है और असमानता में वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त, शोध से पता चलता है कि अधिक बेरोजगारी का होना व्यक्तिगत चिंता से भी जुड़ा है, जो कभी-कभी सामाजिक अशांति का कारण बन सकती है।

नवीनतम आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) के आंकड़ों के अनुसार, 2022-23 की अवधि में कुरुक्षेत्र में पुरुषों की बेरोजगारी दर हरियाणा की दर से काफी अधिक है। कुरूक्षेत्र में पुरुषों की बेरोजगारी दर राज्य के औसत से लगभग दोगुनी है। महिलाओं के लिए, कुरूक्षेत्र में बेरोजगारी दर राज्य के औसत से काफी कम है। हालाँकि, इसका कारण महिला श्रम शक्ति में कम भागीदारी हो सकती है और जिसका परिणाम, कुरूक्षेत्र में महिलाओं का श्रमिक-जनसंख्या अनुपात कम होना है।

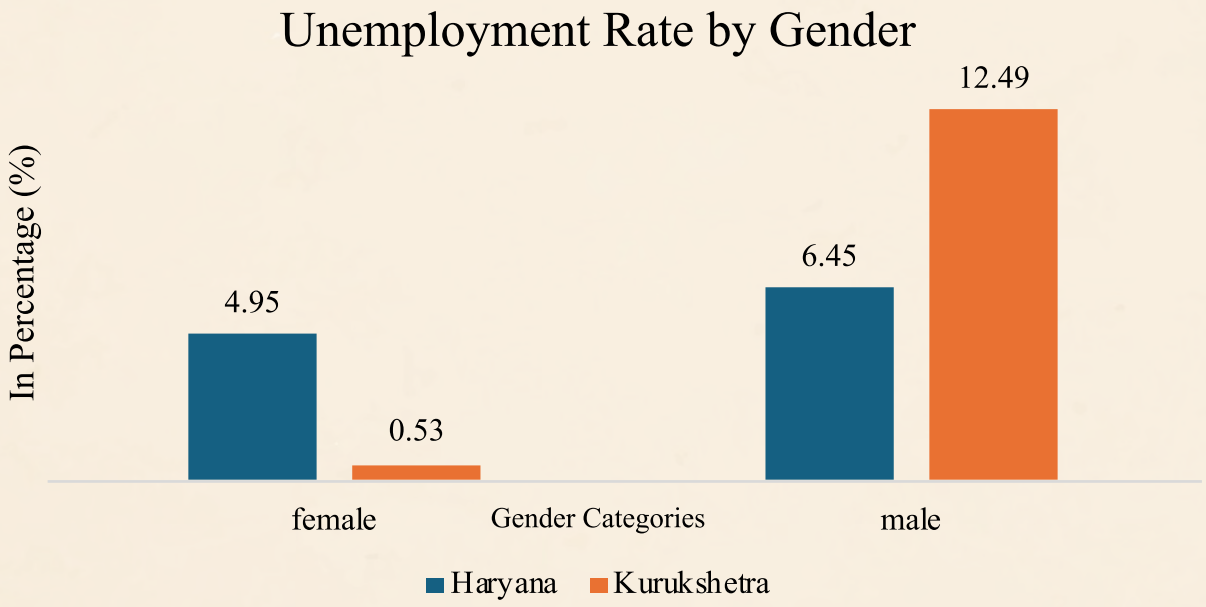

क्षेत्र में सर्वेक्षण के दौरान मिले आख्यान

"हमारे क्षेत्र में सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी है। यहाँ परिवार अपनी ज़मीन का कुछ हिस्सा बेच देते हैं, और यहां तक कि अपने घर भी गिरवी रख देते हैं ताकि उनके बच्चे काम करने के लिए विदेश जा सकें और बेहतर जीवन बना सकें।" - किसानों से बातचीत का अंश

कई युवाओं के लिए विदेश में रोजगार के अवसरों की तलाश करना आम बात है, यहां तक कि अपने देश में नौकरी की संभावनाओं की कमी के कारण वे विदेश जाने के लिए अवैध तरीकों का सहारा भी लेते हैं। कुरुक्षेत्र में, दैनिक वेतन भोगी श्रमिकों को नियमित काम हासिल करने में अत्यहिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ख़ासकर अकुशल श्रमिकों के बीच आवधिक बेरोजगारी का मुद्दा महत्वपूर्ण रूप से चर्चा का बिंदु है। इस बारे में वे अक्सर शिकायत करते हैं।

कृषि श्रमिकों को केवल मौसमी रोजगार मिलता है। एक ईंट राजमिस्त्री से हमने बात की तो उसने भी बताया कि उसे नियमित रूप से काम खोजने के लिए संघर्ष करना पड़ता है।

कार्यसूची क्रियान्वन

एमपीएलएडी निधि का एक बड़ा हिस्सा सड़कों और पुलों के निर्माण, आकस्मिक और अस्थायी वेतन रोजगार पैदा करने के लिए उपयोग किया जाता है। बुनियादी ढांचे में सुधार, वेतन रोजगार प्रदान करने के लिए मौजूदा एमएसएमई की क्षमता का विस्तार करने के लिए वित्त निधि के एक हिस्से का उपयोग करने जो एक सुझाव के रूप में प्रस्तुत किया गया है। साथ ही अतिरिक्त नौकरियां पैदा करने के लिए एमएसएमई की क्षमता विकसित करने का सुझाव भी उपरोक्त सुझाव के साथ संलग्न है। इसके अतिरिक्त, 2022-23 में कुरुक्षेत्र में 19 प्रतिशत से कम मनरेगा परिवारों को 50 दिनों से अधिक का रोजगार मिल सका, जो मजदूरी आधारित रोजगार पैदा करने के लिए बेहतर कार्यान्वयन की संभावना को दर्शाता है।

इसके अतिरिक्त, मत्स्य पालन, डेयरी, कागज उद्योग और बागवानी जैसे उद्योगों में विकास की संभावनाएं हैं, लेकिन इसका उपयोग करने के लिए विस्तृत योजना का अभाव है। खाद्य प्रसंस्करण के बुनियादी ढांचे का विस्तार बेरोजगारी और अल्परोजगार को संबोधित करने का एक प्रभावी तरीका है। आने वाले समय में कुरुक्षेत्र में औद्योगिक क्षेत्र विकसित करने व घरेलू और विदेशी औद्योगिक पूंजी को आकर्षित करने के लिए दिल्ली और चंडीगढ़ के साथ इसकी कनेक्टिविटी का लाभ उठाते हुए एक योजना तैयार किए जाने की आवश्यकता है।

संदर्भित क्षेत्र - शिक्षित बेरोजगार

विवरण

आम रूप से बेरोजगारी को अशिक्षित लोगों की समस्या के रूप में देखा जाता है। आम धारणा यह है कि शिक्षा रोजगार के व्यापक अवसर खोलती है। हालाँकि, भारत में बेरोजगारी का मुद्दा उन लोगों को भी प्रभावित कर रहा है जो अच्छी तरह से शिक्षित हैं। पीएलएफएस 2022-23 रिपोर्ट के अनुसार, जिन्होंने कम से कम उच्च माध्यमिक शिक्षा भी पूरी की है, उनमें भी बेरोजगारी दर बहुत अधिक है। कुरुक्षेत्र में, बेरोजगारी दर हरियाणा की कुल दर से लगभग 2.5 गुना अधिक, 27 प्रतिशत से अधिक है। यहां तक कि जिन लोगों ने उच्च माध्यमिक स्तर तक अपनी शिक्षा पूरी कर ली है, उनमें भी बेरोजगारी दर लगभग 6.5 प्रतिशत है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि कुरुक्षेत्र में शिक्षित व्यक्तियों के लिए नौकरी की संभावनाएँ काफी कम हैं। पूरे राज्य में, विशेषकर कुरुक्षेत्र जिले में गुणवत्तापूर्ण नौकरियों की कमी एक बड़ी चिंता का विषय है।

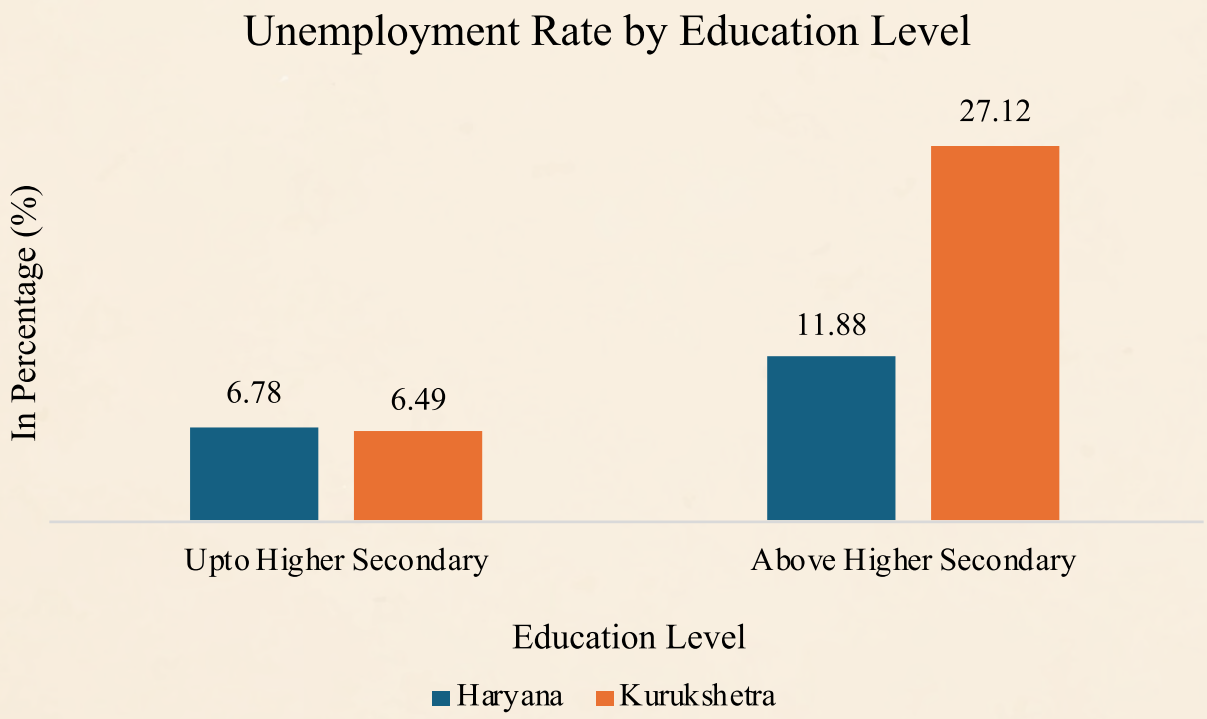

क्षेत्र में सर्वेक्षण के दौरान मिले आख्यान

हमारे सामने ऐसे कई युवा मामले आए हैं जिन्होंने प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा तो पूरी कर ली है लेकिन कोई विशेष कौशल हासिल नहीं किया है। विवेक कुरुक्षेत्र में मैकेनिक की दुकान चलाते है। उन्होंने 10वीं कक्षा तक पढ़ाई की है तथा नौकरी करते करते ही उन्होंने काम सीखा है।

"युवाओं को बेहतर वेतन वाली नौकरियाँ पाने के लिए कुरुक्षेत्र से बाहर जाना चाहिए। मादक द्रव्यों के सेवन के कारण उच्च माध्यमिक शिक्षा में पढ़ाई छोड़ने की दर बढ़ रही है। हमारे बुजुर्ग इसे लेकर चिंतित हैं, इसलिए वे हमसे बाहर निकलने का आग्रह करते हैं।"

कार्यसूची क्रियान्वन

एमपीएलएडी निधि (MPLAD) का केवल एक छोटा सा हिस्सा शिक्षा और कौशल विकास के लिए उपयोग किया जाता है। चूंकि कुछ एमएसएमई का विस्तार हो रहा है, इसलिए आवश्यक कौशल की पहचान करना और कौशल अंतर को पाटने के लिए कुरुक्षेत्र के मौजूदा संस्थानों में अतिरिक्त प्रशिक्षण पाठ्यक्रम बनाने के लिए एमपीएलएडी फंड का उपयोग करना महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त, विशेष रूप से महिलाओं के लिए अधिक औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों सहित कौशल विकास और प्रशिक्षण संस्थानों की स्थापना से श्रम बल की रोजगार क्षमता में सुधार होगा और कुशल श्रम के लिए मांग-आपूर्ति के अंतर को पाट दिया जाएगा। वर्तमान में, महिलाओं को प्रशिक्षण देने के लिए केवल 2 आईटीआई समर्पित हैं। लंबे समय में, एमएसएमई और संगठित फैक्ट्री प्रणालियों के तहत अधिक विनिर्माण इकाइयां स्थापित करने से जिलों में गुणवत्तापूर्ण नौकरियों की उपलब्धता बढ़ेगी।

संदर्भित क्षेत्र - शिक्षित बेरोजगार

विवरण

समय तथा भौगौलिक स्थिति के पड़े अर्थव्यवस्था में योगदान करने की क्षमता युवाओं में अन्य आयु वर्ग के लोगों की तुलना बहुत अधिक रही है। जैसा कि व्याप्त है कि देश जनसांख्यिकीय लाभांश के दौर से गुजर रहा है। हरियाणा और कुरुक्षेत्र भी इससे अछूते नहीं हैं। यदि युवाओं की क्षमता का उपयोग उत्पादक गतिविधियों में नहीं किया जाता है तो वे राज्य के ऊपर एक दायित्व बन जाते हैं और संभावित है कि इससे युवाओं की ऊर्जा न केवल बर्बाद हो जाती है, बल्कि संभवतः विनाशकारी गतिविधि की ओर निर्देशित होती है, जिससे वे अपराध और नशीली दवाओं के उपयोग की तरफ़ झुक जाते हैं। हाल के पीएलएफएस डेटा (2022-23) से पता चलता है कि कुरुक्षेत्र में 24 वर्ष और उससे कम उम्र के व्यक्तियों के लिए बेरोजगारी दर अत्यधिक है। यह दर लगभग 39 प्रतिशत के आसपास है। हरियाणा के लिए भी यह अनुपात बहुत अधिक, लगभग 24 प्रतिशत है जिसमें कुरुक्षेत्र में युवा और सबसे अधिक उत्पादक आयु समूहों के बीच लगभग 14.5 प्रतिशत अधिक बेरोजगारी देखी जा रही है। इसके अतिरिक्त, 25 से 35 वर्ष के बीच के आयु समूहों के लिए, कुरूक्षेत्र में बेरोजगारी दर 11 प्रतिशत से थोड़ा अधिक है, जो कि हरियाणा की औसत दर लगभग 7 प्रतिशत से बहुत अधिक है।

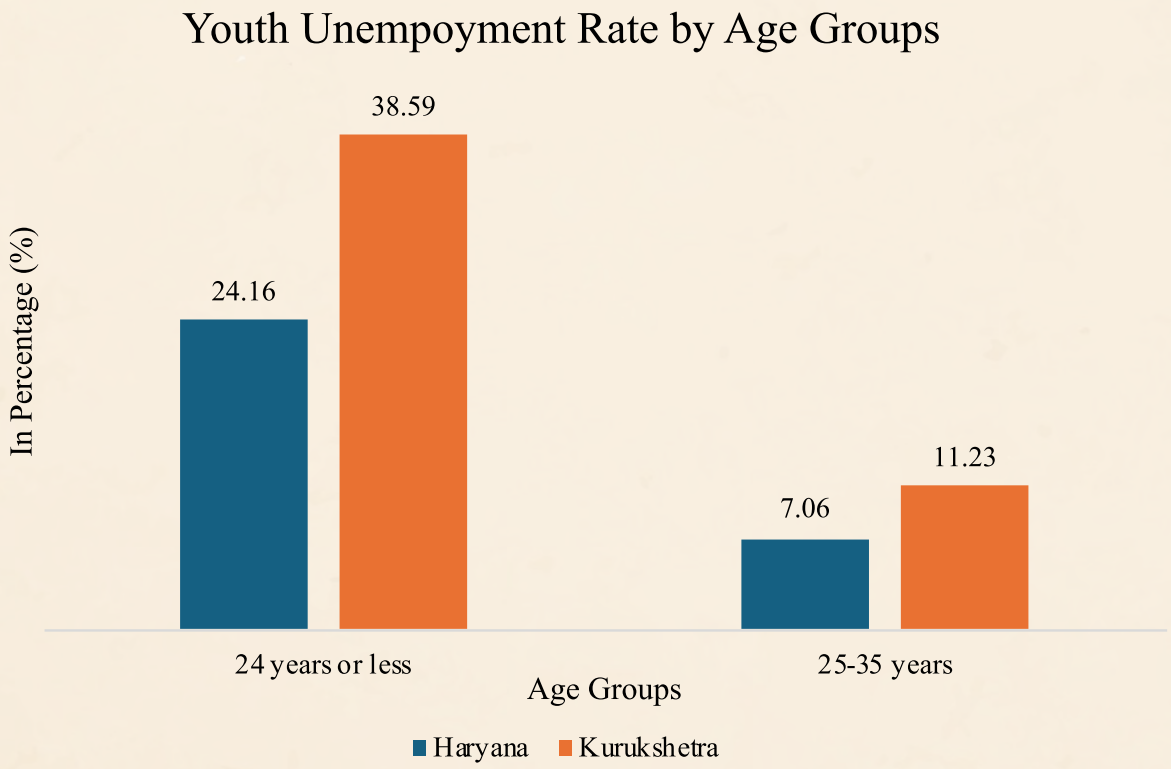

क्षेत्र में सर्वेक्षण के दौरान मिले आख्यान

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के स्नातकों को लगता है कि उनकी शिक्षा अच्छी है फिर भी, मुद्दा यह है कि कुरुक्षेत्र में रोजगार के अवसरों की कमी है, जो उन्हें जिले और राज्य से बाहर जाने के लिए मजबूर करती है।

"कुरुक्षेत्र में निजी क्षेत्र की नौकरियाँ पर्याप्त पैसा नहीं दे रही हैं। हमने अपनी शिक्षा में पैसा लगाया है लेकिन हम पर्याप्त अर्जित नहीं कर पा रहे हैं। अब सरकारी नौकरियाँ बची नहीं हैं. हमें विदेश में बेहतर वेतन वाली नौकरियाँ मिलती हैं, चाहे हम वहाँ किसी भी तरह की नौकरी करें।" -रोहित, पूर्व छात्र, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय।

कार्यसूची क्रियान्वन

एमपीएलएडी (MPLAD) निधि का उपयोग कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय जैसे मौजूदा विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग के माध्यम से कंप्यूटर सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर जैसे रोज़गार-उन्मुख कौशल प्रशिक्षण शुरू करने के लिए किया जा सकता है। उन्नत कौशल प्राप्त करने के लिए छात्रवृत्ति प्रदान करने से युवा और शिक्षित लोगों को तृतीयक क्षेत्र में रोज़गार प्राप्त करने के लिए प्रवेश करने में त्वरित रूप से मदद मिलेगी।

चूंकि युवा बेरोजगारी अधिक है, इसलिए आवश्यक प्रशिक्षण की पहचान करके और क्षेत्रीय आवश्यकताओं के अनुसार समर्पित कौशल विकास संस्थान खोलकर एक बड़ी श्रम शक्ति के लिए पर्याप्त कौशल विकास का सुझाव प्रस्तावित है। इससे युवाओं और शिक्षितों को बेहतर नौकरियां पाने में मदद मिलेगी।

उत्पादन तकनीकों को उन्नत करने और चलनिधि की बाधाओं को दूर करने के लिए एक तकनीकी सहायता पूल और एक निधि संग्रह की स्थापना से स्थानीय एमएसएमई को अपनी गतिविधि का विस्तार करने में भी मदद मिलेगी।

ज़िले में कामकाजी महिला छात्रावासों की संख्या बढ़ाना एक मध्यम अवधि की कार्य योजना होगी। मंत्रालय ने 1975 से 20 कामकाजी महिला छात्रावासों को मंजूरी दी है, जिनमें से केवल 8 कामकाजी महिला छात्रावास हिसार, रोहतक (2), कुरूक्षेत्र, पंचकुला, गुरुग्राम, जिंद और फरीदाबाद में कार्यरत हैं। इनके संचालन में आने वाली बाधाओं को दूर किया जाना चाहिए और इनमें से अधिकाधिक पूर्व-स्वीकृत छात्रावास कुरूक्षेत्र में खोले जाने चाहिए।

दीर्घावधि में, युवाओं की क्षमता का उपयोग करने के लिए औद्योगिक गलियारे, औद्योगिक समूह और सार्वजनिक क्षेत्र की विनिर्माण और सेवा इकाइयाँ खोलने की आवश्यकता है। एमएसएमई समूहों को उच्च मूल्य श्रृंखलाओं के द्वारा पश्चवर्ती तथा अग्रिम आपूर्ति अनुबंधन के माध्यम से बड़ी औद्योगिक इकाइयों के साथ जोड़ना आवश्यक है।

अनुपस्थित युवा समूह

कुरुक्षेत्र रोजगार के अवसरों की भारी कमी का सामना कर रहा है, खासकर शिक्षित युवाओं के संदर्भ में। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों से मिली आख्या के अनुसार युवाओं को काम की तलाश में कुरुक्षेत्र छोड़ना पड़ता है। बहुत से युवा विदेश में रोजगार की तलाश करते हैं, भले ही इसके लिए उन्हें छोटा-मोटा काम करना पड़े, क्योंकि वे कुरुक्षेत्र और हरियाणा में कई निजी क्षेत्र की नौकरियों की तुलना में विदेश में अधिक कमा सकते हैं। कई किसानों के बच्चे कृषि कार्य आगे जारी नहीं रखना चाहते, क्योंकि कृषि कार्य से उनकी वांछित जीवनशैली नहीं चल सकती। आम लोग ऐसे उद्योग में नियमित रोजगार की तलाश करते हैं जो मौसम पर निर्भर न हो और बेहतर वेतन वाली नौकरी के अवसर प्रदान करता हो।

दवाई विक्रेता साथ साक्षात्कार

"मैं चाहता हूं कि सरकार यह पता लगाए कि इतने सारे युवा विदेश क्यों पलायन करते हैं। सरकार को यहीं रोजगार पैदा करना चाहिए ताकि हमारे बच्चों को बाहर न जाना पड़े।' माता-पिता अपने बच्चों को 20-22 साल की उम्र में बाहर भेजते हैं और एक बार चले जाने के बाद बच्चे वापस नहीं लौटते। इसलिए यहां अब कुछ खास नहीं बचा है. मैं चाहता हूं कि सरकार एक ऐसी शिक्षा प्रणाली स्थापित करे जिससे उन्हें यहीं नौकरियां मिलें, ताकि बच्चों को अपने माता-पिता को छोड़कर कहीं दूर न जाना पड़े।'

गाँव के तीन किसानों से साक्षात्कार

"युवा लोग बड़ी संख्या में काम के लिए बाहर जा रहे हैं। यहां तक कि महिलाएं भी काम के लिए बाहर जाती हैं लेकिन अभी उनकी संख्या पुरुषों की तुलना में कम है। वे बाहर जाते हैं और अधिकतर मजदूरी करते हैं।

अधिकतम लोग बारहवीं की पढ़ाई पूरी कर बाहर चले जाते हैं या फिर वे आप्रवासन के अवैध तरीकों का सहारा लेते हैं। उन्हें यहां कोई रोजगार नहीं मिल रहा है। उनके पास जो भी थोड़ी बहुत संपत्ति है, वे उसे बेच देते हैं और बाहर चले जाते हैं। आप हमारे गाँव में देख सकते हैं कि आसपास कोई युवा नहीं है। अगर आप आस-पास खड़े लोगों को देखें तो कोई भी 50 साल से कम उम्र का नहीं है।"

हम उन्हें बिना नौकरी के यहीं रहने के लिए क्या ही कह सकते हैं? या फिर उन्हें प्रतिदिन 12 घंटे के लिए 8,000-10,000 रुपये का भुगतान करने वाली नौकरियां मिल जाती हैं। कोई सरकारी नौकरी उपलब्ध नहीं है, और निजी क्षेत्र कम वेतन देता है।"

क्षेत्रीय केंद्रबिंदु
स्वास्थ्य

संदर्भित क्षेत्र - बच्चों का स्वास्थ्य
अल्प व अति पोषण

विवरण

बचपन में कुपोषण से ग्रसित होना, बाद की उम्र में बच्चों के जीवन के परिणामों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है। कुपोषण - अल्प और अति-पोषण - राज्य में एक लगातार मुद्दा बना हुआ है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण आँकड़ा समुच्चय के दो दौरों के अनुसार, 2015-16 और 2019-21 के बीच हरियाणा की तुलना में कुरूक्षेत्र में सुधार बहुत कम है। हालांकि हरियाणा और कुरूक्षेत्र दोनों में कम वजन वाले बच्चों के अनुपात में कुछ कमी आई है। कुरूक्षेत्र के बच्चों की कुल संख्या के पाँचवे हिस्से से भी अधिक बच्चे जो पाँच वर्ष से कम उम्र के हैं, अभी भी उम्र के अनुपात में कम वजन के हैं। इसके अलावा, अतिपोषण का सह-अस्तित्व कुरुक्षेत्र के लिए दोहरा बोझ है, जिसमें ज़िले का प्रदर्शन राज्य की तुलना में बहुत खराब है। एनएफएचएस के दो दौरों से पता चलता है कि कुरुक्षेत्र में अधिक वजन वाले बच्चों का अनुपात न केवल राज्य के औसत से दोगुना है, बल्कि इसमें शायद ही कोई सुधार हुआ है। तेजी से शहरी विस्तार और बदलती आहार संबंधी आदतें कुछ सबसे महत्वपूर्ण योगदान कारक हैं जो अतिपोषण की बढ़ती समस्या की व्याख्या कर सकते हैं।

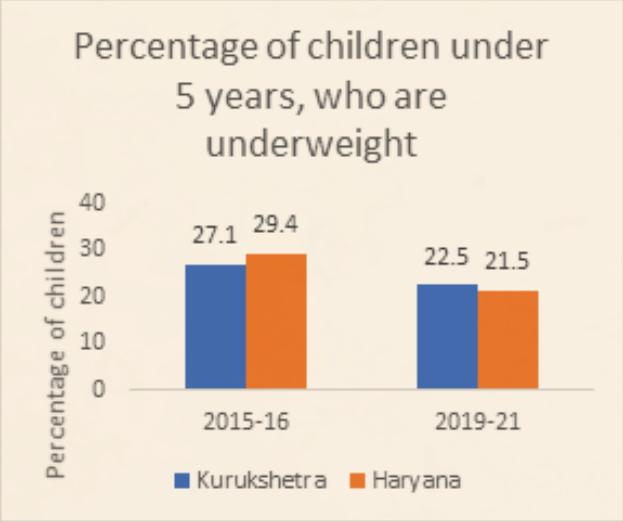

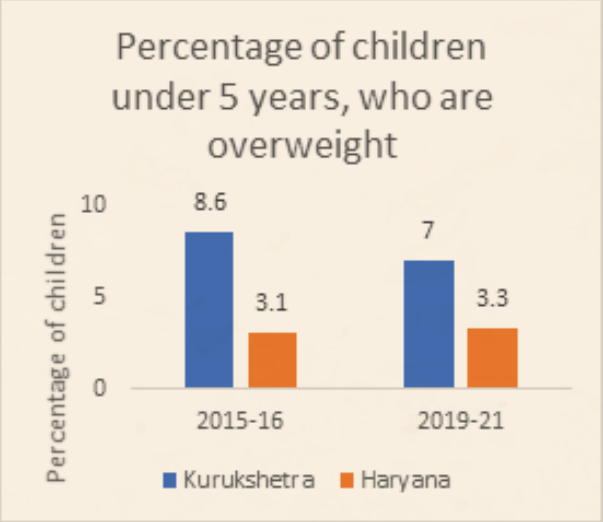

क्षेत्र में सर्वेक्षण के दौरान मिले आख्यान

हमने शहर से दूर स्थित आंगनबाड़ियों की तुलना में कुरूक्षेत्र के पास स्थित आंगनबाड़ियों के रख-रखाव में असमानता पाई। कुरूक्षेत्र के पास आंगनबाड़ियों का रखरखाव अच्छा है, लेकिन अन्य तहसीलों में सुविधाओं में सुधार की जरूरत है। कुरूक्षेत्र से एक घंटे की दूरी पर स्थित आंगनवाड़ी में बहुत अधिक ढांचागत सुधार की आवश्यकता थी। यह क्षेत्र में छोटे बच्चों की पोषण स्थिति में परिलक्षित होता है।

पेहोवा तहसील में स्थित एक गाँव के श्रमिकों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँचने के लिए पेहोवा शहर की यात्रा करनी पड़ती है, क्योंकि उनके गाँव के आसपास के प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल केंद्र में पर्याप्त सुविधाएँ नहीं हैं। यह दैनिक वेतन भोगी श्रमिकों के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती प्रस्तुत करता है क्योंकि अस्पताल आने जाने में समय बिताने के कारण उन्हें आजीविका का नुक़सान उठाना पड़ता है।

परिणामस्वरूप ना केवल उन्हें दैनिक मजदूरी का नुकसान होता है बल्कि अकुशल श्रम आसानी से उपलब्ध होने के कारण काम पर प्रतिस्थापित होने की संभावना भी अधिक होती है।

इसके अलावा, अनियोजित भूमि आवंटन के कारण स्वास्थ्य केंद्रों की भौगौलिक स्थिति बेतरतीब है जिसके कारण अक्सर चिकित्सा सुविधाओं की सख्त जरूरत वाले क्षेत्रों की अनदेखी हो जाती है। उदाहरण के लिए, पिहोवा तहसील के निंबवाला गांव में कैंसर के मामलों में वृद्धि दर्ज की जा रही है। शायद कैंसर जैसी चिकित्सा स्थितियों की ओर विशेष ध्यान आकर्षित किया जा सकता है, और चिकित्सा सुविधाओं को अधिक योजनाबद्ध तरीके से आवंटित किया जा सकता है।

कार्यसूची क्रियान्वन

पहले से चर्चा किए गए मुद्दों के समाधान के लिए कुछ हस्तक्षेप जिन्हें तुरंत शुरू किया जा सकता है, उनमें हितधारकों के साथ परामर्श के बाद, मुद्रास्फीति के प्रभाव को ध्यान में रखते हुए, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं (एडब्ल्यूडब्ल्यू) के मानदेय को 4500 रुपये के मौजूदा स्तर से बढ़ाना शामिल है। इससे आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं (एडब्ल्यूडब्ल्यू) के मनोबल के साथ-साथ आर्थिक प्रोत्साहन को तुरंत बढ़ावा मिलेगा - जो जमीनी स्तर पर किसी भी नीति को लागू करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण घटक है।

इसके अलावा, आहार सुदृढ़ीकरण की दिशा में एक कदम के रूप में, गेहूं के आटे को लौह तत्त्व और फोलिक एसिड के साथ मजबूत बनाने के लिए एक बहुत ही लागत प्रभावी हस्तक्षेप को तत्काल प्रभाव से लागू किया जा सकता है। इसी प्रकार, क्षेत्र के खाद्य व्यवहार के आधार पर प्रोटीन युक्त आहार सामग्री को आंगनवाड़ी केंद्रों के भोजन में शामिल किया जा सकता है।

मध्यावधि से दीर्घावधि में, आंगनवाड़ी केंद्रों (एडब्ल्यूसी) को मजबूत करके सेवा वितरण में सुधार लाने पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। 2020 में, कुरुक्षेत्र में आंगनवाड़ी केंद्रों का घनत्व कुल 53215 लाभार्थियों (गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताओं, साथ ही 0-6 वर्ष की आयु के बच्चों) के लिए 1075 केंद्र था। इस आँकड़े का विश्लेषण करें तो यह प्रति केंद्र लगभग 50 लाभार्थियों का अनुपात बनता है,। आंगनवाड़ी सेवाओं को कुशल रूप से वितरित करने के लिए तथा प्रति केंद्र 30 लाभार्थियों का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए आंगनवाड़ी केंद्रों का घनत्व बढ़ाना अनिवार्य है। इससे आंगनवाड़ी केंद्रों के तहत अधिकाधिक क्षेत्र तक पहुँचना भी सुनिश्चित होगा। वर्तमान में समग्र हरियाणा में आंगनवाड़ी केंद्रों की पहुँच आबादी के लगभग 25 प्रतिशत तक ही है जो कि अपर्याप्त है।

आंगनवाड़ी केंद्रों पर पंजीकृत सभी लाभार्थियों के लिए वर्ष में कम से कम 300 दिनों तक पोषण आहार की निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित करने के प्रयास किए जाने चाहिए। अंत में, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को बेहतर प्रोत्साहन देने के दीर्घकालिक उपाय के रूप में, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के मानदेय के एक हिस्से को उनके प्रदर्शन से जोड़ने का सुझाव दिया जा सकता है।

संदर्भित क्षेत्र
रोगी-बिस्तर अनुपात

विवरण

एक मजबूत शारीरिक स्वास्थ्य बुनियादी ढांचा किसी भी स्वास्थ्य प्रणाली की रीढ़ बनता है। कोविड-19 ने इस स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे के महत्व पर और प्रकाश डाला। हरियाणा के सांख्यिकीय सार की आख्याओं के वर्षों के संकलित आंकड़ों के आधार पर, यह स्पष्ट है कि इस मोर्चे पर, समग्र राज्य औसत की तुलना में, पूर्ण और सापेक्ष स्तर पर, कुरुक्षेत्र खराब प्रदर्शन कर रहा है। 2016-2019 के दौरान कुरुक्षेत्र ज़िले में अस्पताल में उपलब्ध एक बिस्तर के लिए रोगियों की संख्या का अनुपात समग्र राज्य के संबंधित आंकड़ों की तुलना में काफी अधिक है। यह बात जिले के अस्पतालों में बिस्तरों की संख्या के आंकड़ों से भी स्पष्ट होती है। कुरुक्षेत्र में 2016 और 2019 के बीच केवल अस्पतालों में केवल 15 बिस्तर जोड़े गए हैं। हरियाणा के सांख्यिकीय सार, 2021-22 के अनुसार, पूरे जिले में केवल तीन अस्पताल और पांच सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र हैं। सरकार द्वारा संचालित अस्पतालों और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों की कमी परिवारों को निजी अस्पतालों पर निर्भर रहने के लिए मजबूर कर देती है। इससे स्वास्थ्य देखभाल पर उनका खर्च त्वरित रूप से बढ़ जाता है, जिससे यह बुनियादी अधिकार उनके लिए महंगा हो जाता है।

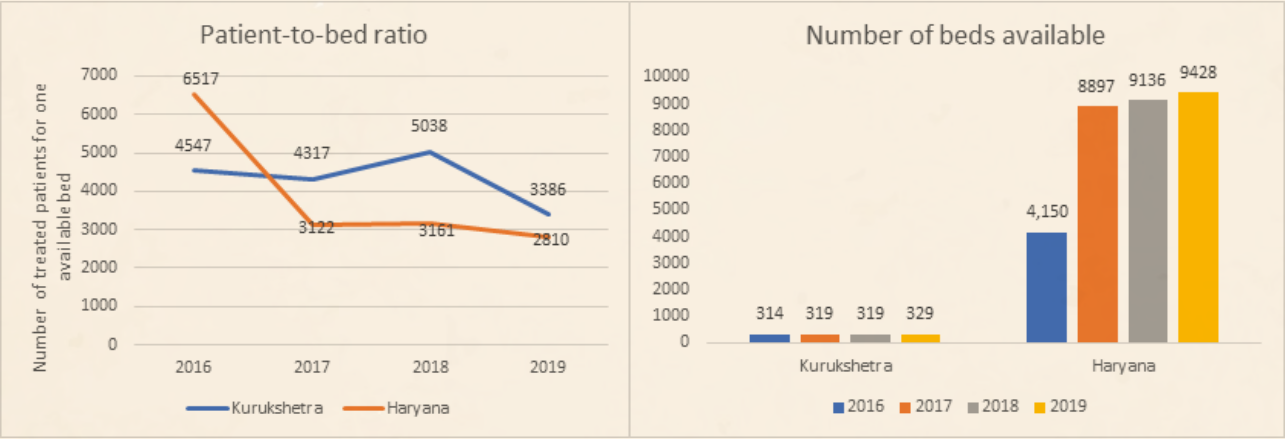

क्षेत्र में सर्वेक्षण के दौरान मिले आख्यान

"स्वास्थ्य सेवाएँ हमारे लिए बहुत महंगी हो गई है। निजी क्लीनिकों में बुनियादी उपचार पाने के लिए हमें 500 रुपये का खर्च आता है जिसमें 300 रुपये परामर्श के लिए व 200 रुपये बुखार की दवा के लिए देने पड़ते हैं। हमारी कमाई में ये खर्च वहन करना मुश्किल है।" - रामपाल, किसान।

लोगों ने हमें बताया है कि आयुष्मान भारत योजना एक अच्छी योजना है, लेकिन निजी अस्पताल अक्सर मरीजों को अनावश्यक चिकित्सा परीक्षण कराने के लिए कहते हैं। साथ ही इस योजना के तहत मिलने वाली दवाएं मरीजों को उचित रूप से वितरित नहीं की जाती हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि लोग निजी स्वास्थ्य देखभाल को प्राथमिकता दे रहे हैं। इसमें अधिक खर्च आता है पर डॉक्टरों, नर्सों और सुविधाओं की गुणवत्ता बेहतर है। हालाँकि, यह विकल्प मजबूरी के कारण अपनाया गया है क्योंकि सरकार द्वारा संचालित स्वास्थ्य सेवा अपेक्षित सेवा प्रदान नहीं करती है।

कार्यसूची क्रियान्वन

बुनियादी स्वास्थ्य ढांचे की अनुपलब्धता की कमी को दूर करने के लिए मध्यम से लंबी अवधि में हस्तक्षेप प्रारंभ किया जा सकता है। 3386 रोगी-बिस्तर अनुपात के साथ, कुरुक्षेत्र हरियाणा के भीतर सबसे खराब प्रदर्शन करने वालों में से एक है। अभी रोगी-बिस्तर अनुपात में यह केवल अंबाला और पंचकुला से ही बेहतर प्रदर्शन कर रहा है।

इस प्रकार, ज़िले के रोगी-बिस्तर अनुपात को राज्य के प्रति बिस्तर लगभग 2800 रोगी के अनुपात के करीब लाने के तात्कालिक लक्ष्य को प्राप्त करने व साथ ही इसे और बेहतर बनाने के दीर्घकालिक लक्ष्य के साथ, जिले में अस्पतालों और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों के बड़े पैमाने पर विस्तार की आवश्यकता है।.

इसके अलावा, भारतीय सार्वजनिक स्वास्थ्य मानक (आईपीएचएस) द्वारा निर्धारित मानदंडों को देखते हुए, जिला अस्पतालों में प्रति 1000 जनसंख्या पर 3.3 बिस्तर होने चाहिए। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कुरूक्षेत्र के ज़िला अस्पताल को बेहतर करने की आवश्यकता है।

संदर्भित क्षेत्र
बच्चों और वयस्कों में एनीमिया की व्यापकता

विवरण

भारत के सबसे महत्वपूर्ण दायित्वों में बच्चों और महिलाओं में होने वाला एनीमिया बना हुआ है। एनीमिया से पीड़ित बच्चों और महिलाओं के अनुपात के आंकड़े हरियाणा के साथ-साथ कुरूक्षेत्र में भी काफी ऊपर हैं। एनएफएचएस के दो दौरों के आधार पर, 2015-16 और 2019-21 के बीच, जहां हरियाणा में महिलाओं और बच्चों में एनीमिया का प्रसार कम हुआ है, वहीं कुरुक्षेत्र में इसमें काफी वृद्धि हुई है। विशेषकर छोटे बच्चों में एनीमिया 2019-21 में कुरुक्षेत्र में लगभग 10 प्रतिशत बढ़ गया है और अब यह राज्य के औसत से बहुत अधिक है। आर्थिक और सामाजिक प्रगति के साथ, समय के साथ संकेतकों में सुधार होना चाहिए था लेकिन आँकड़े कुछ और ही कहते हैं। कुरूक्षेत्र के लिए ये केवल बदतर होते जा रहे हैं।

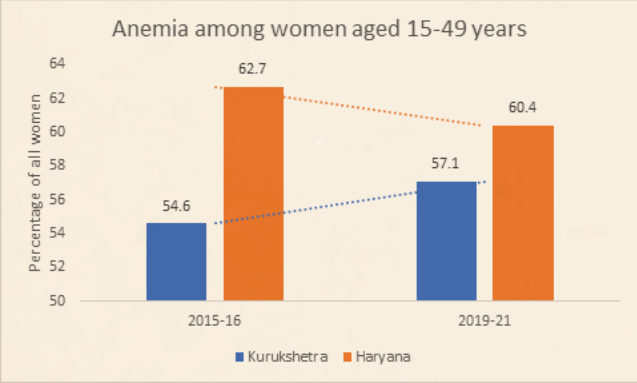

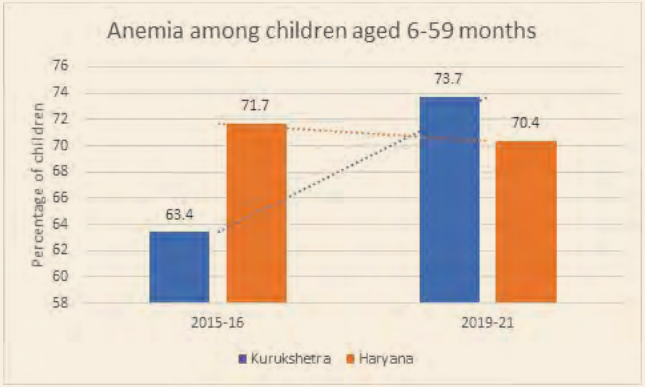

कार्यसूची क्रियान्वन

एनीमिया के बढ़ते प्रसार को संबोधित करने के लिए पहला कदम आंगनवाड़ी केंद्रों में आयरन की खुराक का वितरण शुरू करना है, साथ ही आशा कार्यकर्ताओं के माध्यम से इसे घर-घर पहुंचाना है।

समान रूप से इस समस्या के समाधान के लिए आहार सुदृढ़ीकरण एक बहुत ही लागत प्रभावी और त्वरित उपाय है। इस दिशा में एक कदम के रूप में, घर पहुँचाए जाने वाले राशन के साथ-साथ आंगनवाड़ी केंद्र में पकाए गए भोजन के लिए गेहूं के आटे को आयरन और फोलिक एसिड के साथ मिश्रित करना महत्वपूर्ण है।

इस मुद्दे को खत्म करने के दीर्घकालिक समाधान के रूप में पहले की गई चर्चा से स्पष्ट है कि महिलाओं के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए ठोस प्रयास करने की आवश्यकता है। आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और माताओं के बीच साप्ताहिक केंद्रित समूह वार्तालाप आयोजित करके, सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करके और आंगनवाड़ी केंद्रों के तंत्र को मज़बूती प्रदान करके यह हासिल किया जा सकता है।

क्षेत्रीय केंद्रबिंदु
शिक्षा

संदर्भित क्षेत्र
स्कूली शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर स्कूलों का वितरण

विवरण

सूचना के अधिकार अधिनियम 2010 के तहत अधिनियमित हमारे संविधान द्वारा 6 से 14 वर्ष की आयु के बीच के प्रत्येक बच्चे के लिए शिक्षा को मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता दी गई है। बच्चों को समग्र शिक्षा प्रदान करने के लिए स्कूल सबसे बुनियादी आवश्यकताहै। यहाँ यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि स्कूली शिक्षा के प्रवेश स्तर, यानी शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर बच्चों का नामांकन सुनिश्चित करना एक आवश्यकता है। साथ ही यह सुनिश्चित करना भी आवश्यक है कि जो बच्चे स्कूलों में नामांकित हैं वे अपनी स्कूली शिक्षा पूरी कर सकें। इस प्रकार, शिक्षा की निरंतरता और पूर्णता, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर की शिक्षा वाले स्कूलों की निकट क्षेत्र में उपलब्धता पर महत्वपूर्ण रूप से निर्भर है। वर्ष 2021-22 के लिए शिक्षा के लिए एकीकृत जिला सूचना प्रणाली (यूडीआईएसई) के आंकड़ों के आधार पर, यह स्पष्ट है कि कुरुक्षेत्र में स्कूलों का एक बड़ा हिस्सा केवल प्राथमिक स्तर यानी की केवल कक्षा एक से पाँच तक है। हरियाणा की तुलना में, कुरूक्षेत्र में बारहवीं कक्षा तक संपूर्ण शिक्षा प्रदान करने वाले स्कूलों का प्रतिशत काफी कम है।

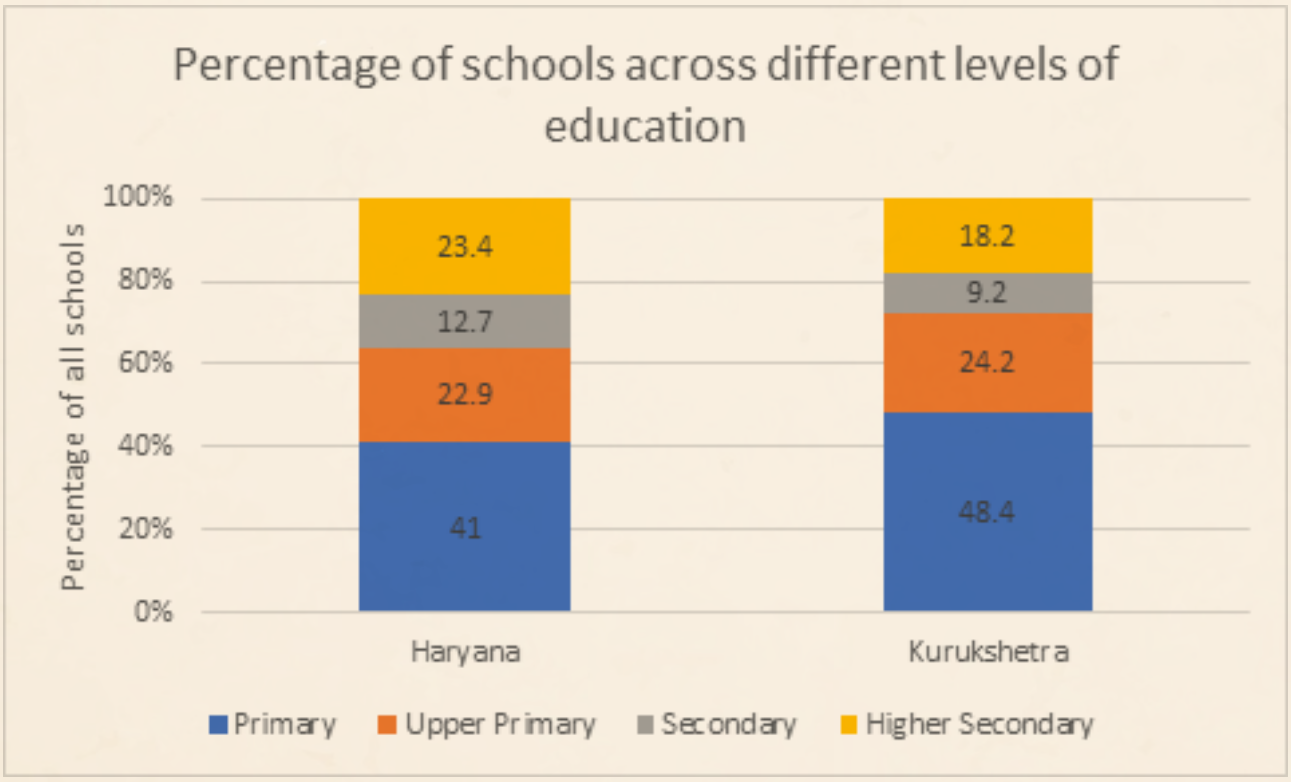

क्षेत्र में सर्वेक्षण के दौरान मिले आख्यान

प्राथमिक विद्यालय अधिकांश लोगों के लिए सुलभ हैं, और गांवों में प्राथमिक विद्यालय भी पास में हैं। समस्या माध्यमिक शिक्षा तक पहुँच को लेकर दिखाई देती है, जिसके लिए स्कूल गाँव में काफी दूरी पर स्थित होते हैं। इस कारण अपने बच्चों को शिक्षित करने के इच्छुक कई परिवारों के लिए स्कूल तक आवागमन एक चुनौती बन जाता है।

एक दैनिक आय प्राप्त करने वाले मजदूर ने हमें बताया कि वह चाहता है कि उसके सभी बच्चे, लड़के और लड़कियां सभी आगे की पढ़ाई करें। हालाँकि, पेहोवा में माध्यमिक विद्यालय बहुत दूर स्थित है और वहाँ तक रोज़ आवागमन उनके लिए एक बाधा के समान है।

कार्यसूची क्रियान्वन

बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के तहत निर्धारित नियमों के अनुसार, कक्षा एक से पाँच तक के बच्चों को एक किमी के दायरे में स्कूल की उपलब्धता होनी चाहिए। कक्षा छह से आठ के बच्चों के लिए 3 किलोमीटर के दायरे में स्कूल होना चाहिए। कुरुक्षेत्र में प्राथमिक स्कूली शिक्षा तक लगभग सार्वभौमिक पहुंच है। मध्य, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्कूली शिक्षा तक बच्चों की सार्वभौमिक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए हस्तक्षेप की आवश्यकता है। यह हस्तक्षेप बच्चों द्वारा अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने में सक्षम होने के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

तात्कालिक रूप से स्कूल की उपलब्धता के इस मुद्दे को संबोधित करने के लिए स्कूल तक पहुंच पाना आसान बनाने वाले हस्तक्षेपों के माध्यम से बच्चों को उच्च-स्तरीय शिक्षा प्रदान करने वाले स्कूलों से जोड़ने की आवश्यकता है। यह स्कूलों तक बच्चों को ले जाने के लिए सार्वजनिक बस या कोई अन्य परिवहन सेवाएं प्रदान करके किया जा सकता है। उन लड़कियों और लड़कों के लिए जिन्होंने माध्यमिक शिक्षा पूरी कर ली है और उन्हें आगे अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने में मदद मिल सके इसके लिए साइकिल प्रदान करके आवागमन की समस्या का निदान किया जा सकता है।

दीर्घावधि में यह सुनिश्चित करने के लिए कि प्रत्येक बच्चे के पास एक किलोमीटर के भीतर एक प्राथमिक विद्यालय और तीन किलोमीटर के दायरे में एक माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय है, नए स्कूल भवनों का निर्माण करने की आवश्यकता है अथवा मौजूदा स्कूलों में जहां कक्षा एक से पाँच तक की पढ़ाई जारी है वहाँ स्कूली शिक्षा को उच्च स्तर तक उन्नत करने करके बच्चों की अनवरत शिक्षा की सुनिश्चित किया जा सकता है।

संदर्भित क्षेत्र - निजी स्कूली शिक्षा
निजी स्कूलों में नामांकित बच्चों का प्रतिशत

विवरण

हरियाणा राज्य और कुरुक्षेत्र ज़िले में सरकारी स्कूलों का एक विशाल तंत्र है फिर भी अधिकतम परिवार अपने बच्चों को निजी स्कूलों में भेजने को प्राथमिकता देते हैं। यह निजी स्कूलों में शिक्षा की कथित उच्च गुणवत्ता के कारण संभावित है। इसके अलावा यह भी माना जाता है कि निजी स्कूलों में बच्चे धाराप्रवाह अंग्रेजी बोलना सीखेंगे, जिसे भविष्य में नौकरी प्राप्त करने के लिए एक आवश्यक कौशल माना जाता है। 2012 और 2018 के बीच शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट (एएसईआर) के आधार पर, निजी स्कूल के लिए बढ़ती प्राथमिकता हरियाणा और कुरुक्षेत्र दोनों में दिखाई दे रही है। हालाँकि, हरियाणा की तुलना में, कुरुक्षेत्र में निजी स्कूलों में नामांकित बच्चों का प्रतिशत थोड़ा कम है, लेकिन यहाँ यह ध्यान रखना भी महत्वपूर्ण है कि कुरुक्षेत्र के आधे से अधिक बच्चे निजी स्कूलों में नामांकित हैं, जो सरकारी स्कूलों के विपरीत, एक बड़ी लागत पर शिक्षा प्रदान करते हैं। यह लागत परिवारों के लिए यह बहुत अधिक हो सकती है। इसका एक कारण उन सरकारी माध्यमिक स्कूलों तक ना पहुँच पाना भी है जहां उच्च शिक्षा प्रदान की जाती है।

परिवारों को कभी-कभी अपने बच्चों को अधिक कीमत पर पास के निम्न-गुणवत्ता वाले निजी स्कूलों में भेजने के लिए मजबूर होना पड़ता है। कुरुक्षेत्र में, निजी स्कूलों में नामांकन में लड़कियों की तुलना में लड़कों का प्रतिशत अधिक है। चूंकि निजी स्कूली शिक्षा महंगी है, इसलिए परिवार लड़कियों की तुलना में लड़कों की शिक्षा पर खर्च करने को तैयार हैं।

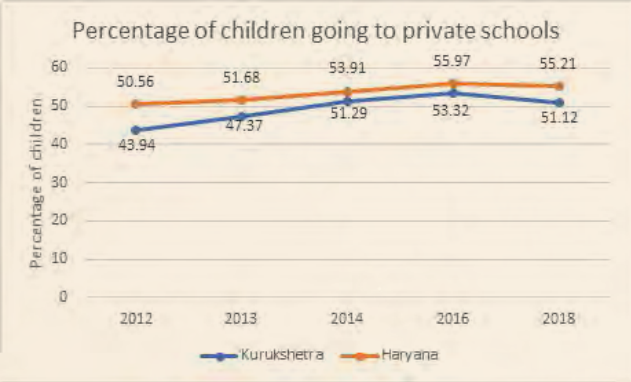

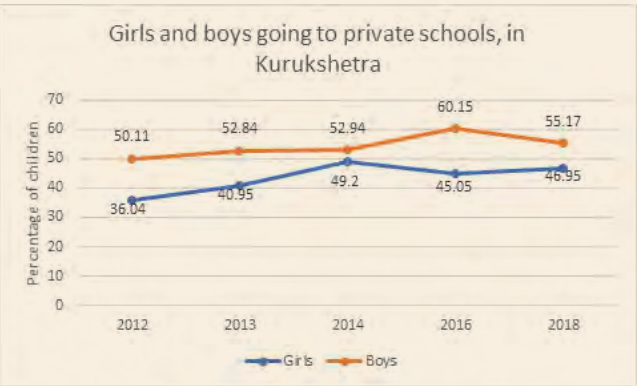

क्षेत्र में सर्वेक्षण के दौरान मिले आख्यान

सार्वजनिक स्कूलों में शिक्षकों की कमी और शिक्षण की गुणवत्ता के कारण, कई लोग अपने बच्चों को बेहतर भविष्य देने के लिए निजी स्कूलों में भेजते हैं, भले ही यह उन्हें महँगा पड़े।

"शिक्षा बहुत महँगी हो गई है। मेरे रिश्तेदारों ने 50,000 रुपये की अग्रिम राशि भरकर अपने लड़के को प्लेस्कूल में दाख़िला दिलवाया है। यहां सरकारी स्कूल की इमारत ख़राब हालत में है।सरकारी स्कूल में पर्याप्त शिक्षक नहीं हैं, और कुछ स्कूलों में तो बिजली भी नहीं है। अगर अच्छे शिक्षक मौजूद हों और कुछ सुविधाएं उपलब्ध हों तो लोग अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों में ज़रूर भेजना चाहेंगे।" - रामपाल, किसान।

कार्यसूची क्रियान्वन

निजी स्कूलों के प्रति बढ़ती प्राथमिकता का एक महत्वपूर्ण कारण सरकारी स्कूलों तक पहुंच की कमी है, जिसे पूर्व में चर्चा किए गए उपायों के माध्यम से संबोधित किया जा सकता है। हालाँकि, इसके अलावा, ये बढ़ती प्राथमिकताएँ निजी स्कूलों में शिक्षा की कथित उच्च गुणवत्ता से भी उत्पन्न हो सकती हैं। इन चिंताओं को दूर करने के लिए, सरकारी स्कूलों में शिक्षा की समग्र गुणवत्ता में सुधार के लिए विशिष्ट उपायों जैसे क्षमता विकास प्रशिक्षण, शिक्षकों के प्रदर्शन की निगरानी, सरकारी स्कूलों में विशेष पाठ्यक्रमों की पेशकश, जैसे अंग्रेजी बोलने का पाठ्यक्रम, आदि को अपनाने की आवश्यकता है,

संदर्भित क्षेत्र - शिक्षा की गुणवत्ता
कक्षा छह से आठ तक के बच्चों के शिक्षा परिणाम

विवरण

स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता का सबसे महत्वपूर्ण संकेतक बच्चों के परिणाम हैं। शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट (एएसईआर) विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों के बीच एक वार्षिक सर्वेक्षण आयोजित करती है, जिसमें अनिवार्य रूप से पढ़ने और बुनियादी गणितीय क्षमता जैसे बुनियादी शिक्षा के आधार पर उनका आकलन किया जाता है।

2013 और 2022 के बीच के वर्षों के एएसईआर आँकड़ा समुच्चय के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वर्ष 2022 में, हरियाणा में वर्तमान में कक्षा छह से आठ में नामांकित बच्चों में से 26 प्रतिशत बच्चे कक्षा दो के स्तर का पाठ नहीं पढ़ सकते थे। कुरूक्षेत्र का यह आंकड़ा 24 प्रतिशत है जो हरियाणा के आँकड़े से थोड़ा ही कम है। 2013 से 2018 के बीच शिक्षण मानक में जो भी उपलब्धि हासिल हुई थी, वह 2018 से 2022 के बीच कम होती दिख रही है। बच्चों की गणितीय क्षमताओं के संकेतक और भी खराब हैं, जिसमें, कुरुक्षेत्र में आधे से अधिक बच्चे, जो कक्षा छह से आठ में नामांकित हैं- बुनियादी गणित समस्या माने जाए वाले योग को भी हल नहीं कर सकते हैं। इसके परिणामस्वरूप कमज़ोर आलोचनात्मक सोच और समस्या-समाधान कौशल, एसटीईएम-आधारित (STEM-based) व्यवसायों के लिए आवश्यक आवश्यकताएं प्रभावित होंगी।

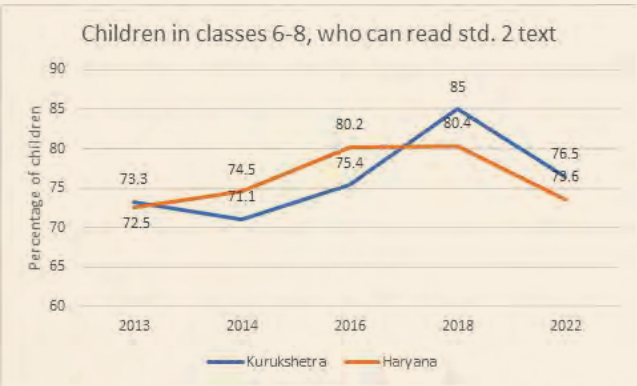

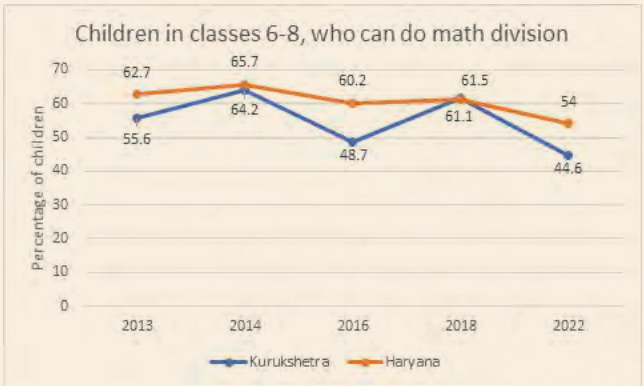

क्षेत्र में सर्वेक्षण के दौरान मिले आख्यान

एक दवाई विक्रेता ने सार्वजनिक स्कूलों में कर्मचारियों की कमी के कारण शिक्षा की निम्न गुणवत्ता के मुद्दे पर प्रकाश डाला क्योंकि रिक्त संकाय पद नहीं भरे जा रहे थे:

"सरकार ने यहां तीन-चार करोड़ रुपये की लागत से एक स्कूल बनाया है, लेकिन वहां पर्याप्त शिक्षक नहीं हैं। छात्र तो हैं, लेकिन पर्याप्त शिक्षकों के बिना शिक्षा का क्या मतलब है? 9वीं और 10वीं कक्षा के लिए कोई विज्ञान का शिक्षक नहीं है।" यह बारहवीं की शिक्षा के लिए एक वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय है, लेकिन शिक्षकों के ना होने पर कोई अनुशासनात्मक धारा स्थापित नहीं की गई है। हमने स्कूल के प्रधानाचार्य से बात की तो उन्होंने कहा कि उन्होंने अधिक शिक्षकों के अनुरोध के लिए सरकार को एक आवेदन भेजा है जिस पर अभी कोई कार्रवाई नहीं की गई है। सरकार को इस मुद्दे पर ध्यान देना होगा। अन्यथा शिक्षकों की कमी के कारण यदि छात्र आना बंद कर देंगे तो विद्यालय भवन पर तीन-चार करोड़ रुपये खर्च करने का क्या मतलब होगा?"

"हाल ही में, सरकार ने ब्लॉक स्तर पर कुछ स्कूलों को सीबीएसई बोर्ड से संबद्ध किया है। यदि वे सफल होते हैं, तो अन्य स्कूल भी सीबीएसई पैटर्न का पालन कर सकते हैं। यदि शिक्षक अच्छे और पर्याप्त संख्या में हैं, तो जो लोग अपने बच्चों को निजी स्कूलों में भेज रहे हैं वे उन्हें सरकारी स्कूलों में भेजने लगेंगे। सरकारी स्कूलों में शिक्षक बेहतर हैं, उनके पास बीएड, एमफिल और पीएचडी जैसी योग्यताएं हैं, जो निजी स्कूलों के पास नहीं हैं। सरकार को इस तरफ़ ध्यान देना होगा"

कार्यसूची क्रियान्वन

बच्चों में कमज़ोर शिक्षा का प्रसार न केवल कुरूक्षेत्र, बल्कि हरियाणा में भी बढ़ती चिंता का विषय है। सीखने के परिणामों में इन स्पष्ट अंतरालों को दूर करने के लिए, स्कूल और बच्चे के स्तर पर लक्षित हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

बाल स्तर पर, विशेष रूप से संज्ञानात्मक चुनौतियों का सामना करने वाले छात्रों के लिए ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान गणित शिविर जैसी अंतर मिटाने वालीं ब्रिज कक्षाएं प्रदान करना तथा उनके समग्र रूप से सीख पाने के परिणामों को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। स्कूलों और शिक्षकों के मौजूदा बुनियादी ढांचे का उपयोग करके इस उपाय को तात्कालिक रूप से अपनाया जा सकता है। विशेषतः स्कूल के बाद रोजगार क्षमता बढ़ाने के दृष्टिकोण से इस तरह के हस्तक्षेपों का दीर्घावधि में बहुत अधिक व बड़ा प्रभाव हो सकता है।

इसके अतिरिक्त, विशेष शिक्षा और कौशल वाले अधिक शिक्षकों जैसे विज्ञान और गणित में उच्च शिक्षा प्राप्त शिक्षकों को स्कूलों में नियोजित करने की आवश्यकता है। यह मुख्य रूप से छात्रों की गणितीय क्षमता में सुधार के लिए महत्वपूर्ण हो सकता है।

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय और स्नातक छात्रों के मुद्दे

कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय विभिन्न विभागों और संकायों वाला एक प्रतिष्ठित संस्थान है। इसे हरियाणा के सर्वश्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थानों में से एक माना जाता है और राष्ट्रीय स्तर पर इसकी अच्छी स्थिति है। संस्थान से निकलने वाले छात्र कुशल अवश्य होते हैं, लेकिन निजी क्षेत्र में रोजगार के अच्छे अवसर न होने के कारण उन्हें बड़े शहरों का रुख करना पड़ता है अथवा विदेश जाना पड़ता है। ऐसे संस्थानों से निकलने वाले युवा अपने ज़िले में पास में ही नियमित और अच्छे वेतन वाला रोजगार चाहते हैं। दिये गये सुझावों में एक सुझाव यह भी प्रस्तावित है कि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय अपने छात्रों को उपयुक्त रोजगार खोजने में मदद करे भले ही उसकी उपलब्धता क्षेत्र के बाहर हो। छात्रों के लिए रोज़गार के अवसरों तक बेहतर पहुंच संभव करने के लिए विश्वविद्यालय खुद को विकसित करने तथा सुधार करने को बढ़ावा दे सकता है।

O.P. JINDAL GLOBAL
INSTITUTION OF EMINENCE DEEMED TO BE
UNIVERSITY
A Private University Promoting Public Service

I.D.E.A.S.
OFFICE *of*
INTERDISCIPLINARY STUDIES

O.P. Jindal Global University, Sonipat Narela Road,
Sonipat-131001, (Delhi NCR), Haryana, India

jindalglobaluni jindalglobaluni jindalglobaluni jindalglobaluni jguvideo

JGU - An Initiative of Jindal Steel & Power Foundation

www.jgu.edu.in